अग्रबंधु

↑ मेरठ में आयोजित सम्मान समारोह में प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री
श्री इन्द्रचन्द्र मित्तल राजस्थान के मनोनीत राज्यपाल
श्री रघुकुल तिलक का स्वागत करते हुए.

छत्तीसगढ़ आंचलिक एवं मध्यप्रदेश अग्रवाल महासभा के संयुक्त सम्मेलन का
आकर्षक मंच और उस पर बैठे केन्द्रिय, प्रान्तीय एवं स्थानीय नेतागण ↓

अ० भा० अग्रवाल महासंघ

नई दिल्ली में ६-१० जुलाई को अधिवेशन

नई दिल्ली। प्रदेश अग्रवाल संघ की कार्यकारिणी की बैठक गत १४ मई ७७ को श्री प्रहलाद राय गुप्ता की अध्यक्षता में कार्यालय में हुई।

बैठक में पिछली कार्यवाही की सम्पुष्टि हुई और अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये। बैठक में महासचिव बशेसरनाथ गोटेवाले ने यह बताया कि पिछली बैठक (१५ १-७७) में जो निर्णय लिये गये थे वह महा चुनाव के कारण क्रियान्वित नहीं हो सके।

इस बैठक में अन्तिम रूप से यह यह निर्णय लिया गया कि अखिल भारतीय अग्रवाल महासंघ का अधिवेशन आगामी ६ और १० जुलाई ७७ को दिल्ली में विशाल रूप में किया जाये। अध्यक्ष प्रहलाद राय गुप्ता ने अधिवेशन की रूप रेखा पर विचार प्रकट करते हुये इसे बहुत अच्छे रूप में करने की सलाह दी। देवकीनन्दन गुप्त तथा अन्य उपस्थितजनों ने इसका पूरी तरह समर्थन किया। सर्वश्री प्रभुदयाल मित्तल, प्यारेलाल, ज्ञानचन्द अग्रवाल, ने इस सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये।

संघ के महासचिव बशेशरनाथ गोटेवाले ने बताया कि सम्मेलन के लिये इन्टर नेशनल बस टर्मिनल के स्थान का चयन किया गया है जहां देश के विभिन्न भागों से पधारने वाले प्रतिनिधियों के आवास की सुन्दर व्यवस्था की जायेगी।

आवास व्यवस्था हेतु श्री राधेश्याम गुप्ता के संयोजन में आवास समिति का गठन किया गया। इस समिति के अन्य सदस्य है : श्री ज्ञान-चन्द अग्रवाल, प्यारेलाल गुप्ता, श्री दयानन्दबसंल, दुर्गाप्रसाद अग्रवाल।

बैठक में देवकीनन्दन गुप्त ने अग्रवाल समाज में भांगडा नृत्य की बढ़ती हुई कुरीति पर चिन्ता व्यक्त की। महासचिव गोटे वाले ने कहा कि सभी स्थानों पर इसे बन्द करने के लिये स्थानीय सभाओं को ठोस कदम उठाने चाहिये। इस प्रस्ताव को सर्व सम्मिति से पास किया।

एक अन्य प्रस्ताव में यह भी निर्णय हुआ कि दिल्ली में जिन क्षेत्रों में अग्रवाल सभाएं स्थापित नहीं है वहां अग्रवाल सभाओं का गठन किया जाय। दिल्ली-प्रदेश अगवाल सघ के उपप्रधान व मंत्रियों पर इसका दायित्व सौंपा गया।

सर्व सम्मति से उपरोक्त प्रस्ताव स्वीकार करने के संदर्भ में मा. लक्ष्मीनारायण अग्रवाल ने इस पर जोर दिया कि प्रदेश अग्रवाल सघ सामाजिक कुरितियों को दूर करने के लिये आगे आये और अखिल भारतीय महासंघ का अधिवेशन ६-१० जुलाई को पूरी तैयारी और संगठन के साथ किया जायें।

अग्रबन्धु

वर्ष २०] मई १९७७ [अङ्क ८

भू० पू० प्रधान संरक्षक
सेठ बिशम्भर नाथ भगत
कुञ्ज बिहारीलाल अग्रवाल

प्रधान संरक्षक
आदिराम सिंघल, आगरा
भू० पू० सदस्य विधान सभा, उत्तर प्रदेश

मुख्य संरक्षक
श्रीभगवान अग्रवाल, आगरा

सम्पादक मण्डल
डा० स्वराज्यमणि अग्रवाल, जबलपुर
डा० भगवतशरण अग्रवाल, अहमदाबाद
त्रिलोक गोयल, अजमेर
द्वारका प्रसाद गर्ग, कलकत्ता
नरेन्द्रमोहन अग्रवाल 'पागल', नागपुर
दुलीचन्द अग्रवाल 'शशि', हैदराबाद
श्याम गोयल, इन्दौर
राजेन्द्र गर्ग, कलकत्ता-१
राजकुमार अग्रवाल, आगरा
सम्पादिका 'घर-घर की ज्योति'
श्रीमती अलका गोयल एम० ए०
सम्पादक "नन्ने मुन्ने"
सुनिल भैय्या एम० ए० (उत्तर्द्ध)

प्र० सम्पादक—**प्रकाश बंसल "बन्धु"**

व्यवस्थापक
दीनानाथ गर्ग, फिरोजाबाद
विमल बंसल, अनिल 'अनीत' आगरा
फोन : ६३६०६ पी० पी०

अग्रबन्धु मासिक कार्यालय
प्रयागनरायन मार्ग, आगरा : फोन ७३७३५

वचनामृत

जैसे हो पर-द्रव्य और पर-स्त्री की इच्छाएं तो मन से निकाल ही दो। फिर भले ही इस प्रपंच में सुखपूर्वक रहो। अपने व्यवहार में दंभ को स्थान न दो। अत्यन्त शांत रहो और रामनाम-रस का सेवन करो। स विषय में आलस न करो। सारे जगत के मित्र बनकर रहो। वाणी से अशुभ वचन न बोलो। दुर्जनों के सहवास में न रहो। परमार्थ की साधना के लिए जैसे प्रयत्न संतो ने किया है वैसा तुम भी करो।

●

परस्त्री को माँ के समान मानने से क्या खर्च होता है? दूसरे की निन्दा न की और दूसरे के द्रव्य की अभिलाषा न की, तो उसमें तुम्हारा क्या खर्च होता है? राम-राम कहने से तुमको क्या श्रम होता है? सन्तों के वचनों पर विश्वास रखने से तुम्हारा क्या खर्च होता है? सच बोलने से तुम्हें क्या कष्ट होता है? और तुम्हारा क्या खर्च होता है? केवल उतने से ही प्रभु की प्राप्ति होती है और कोई झंझट करने की आवश्यकता नहीं है।

वासना को जड़ से उखाड़े बिना भवजाल नहीं टूट सकता।

—सन्त तुकाराम

वार्षिक १२) —०— इस अङ्क का १)२५

VAT INVOICE

राजस्थान के नये राज्यपाल
अग्रकुल भूषण
श्री रघुकुल तिलक

—शिवकुमार गोयल

सर्वोदयी नेता श्री जय प्रकाश नारायण ने ५ जून १९७४ को देश के बुद्धिजीवी वर्ग का आव्हान किया था कि वह सरकार के भ्रष्टाचार 'भाई भतीजा वाद' तथा अन्य बुराईयों के विरुद्ध उठ खडा हो तथा गांधीजी की तरह 'प्रशासन से असहयोग' कर आदर्श उपस्थित करे।

उनके इस आह्वान का सबसे पहले पालन किया था देश के वयोवृद्ध सर्वोदयी नेता, साहित्यकार तथा शिक्षा सेवी प्रो. रघुकुल 'तिलक' ने, काशी विद्यापीठ के उप कुलपति पद से त्याग पत्र देकर।

राष्ट्रीय महापुरुषों में अग्रवाल विभूति की एक श्रृंखला

राजस्थान के नये राज्यपाल श्री रघुकुल तिलक का जन्म ७ जनवरी १९०० को मेरठ के एक अग्रवाल परिवार में हुआ था। वे कांग्रेस के शीर्षस्थ नेताओं में रहे हैं तथा अनेक बार जेल यातनाएं सहन कर उन्होंने स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय योगदान किया। वे सन् १९३९ तथा १९४६ में उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य चुने गये। १९४६ में वे संसदीय सचिव (शिक्षा) भी रहे। उत्तर रेलवे आयोग तथा राजस्थान रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने देश की सेवा में योगदान किया।

तिलक जी ने 'आधुनिक इंग्लैंड का इतिहास' "भारतीय प्रजातन्त्र तथा लोकतंत्र" आदि अनेक ग्रन्थ लिखे। उन्हें रचनाओं के लिए पुरस्कृत भी किया गया। वे अँग्रेजी, हिन्दी, बंगला के महान विद्वान हैं।

क्षण निश्चय के साथ असहयोग करने हतु त्यागमयी भावना

महात्मा गांधी तथा आचार्य विनोवा भावे के निकट सहयोगी श्री तिलकजी १९७१ में काशी विद्यापीठ के उप कुलपति बनाये गये थे। सर्वोदयी नेता श्री जय प्रकाश नारायण के आह्वान पर उन्होने 'असहयोग' के उद्देश्य से तेद से त्याग पत्र देते हुए लिखा था "मैं ऐसी सरकार के किसी भी कार्य में सहयोगी नहीं हो सकता, जो भ्रष्टाचार तथा भाई भतीजावाद का शिकार बनकर गांधीजी के सिद्धान्तों को त्याग चुकी है।"

७७ वर्षीय इस वयोवृद्ध सर्वोदयी नेता ने आपातकाल का भी डटकर विरोध

किया था तथा चुनाव घोषित होने पर वे 'भारत में पुनः लोकतंत्र की वापसी' "के मुद्दे को लेकर जनता पार्टी के मेरठ जिला संयोजक के रूप में लगे रहे।

ऐसे माहौल में जबकि 'आपात काल' ने बुद्धिजीवियों के मुंह पर ताला लगाकर उनकी जुवान बन्द कर दी थी तथा अनेक अवसरवादी लेखक, पत्रकार तथा शिक्षा शास्त्री २० सूत्री तथा ५ सूत्री कार्यक्रमों का 'कलमा' पढ़कर तानशाही कार्यकलापों को 'अनुशान' की संज्ञा देने में होड़ लगा रहे थे, उसी दौरान श्री रघुकुल 'तिलक' जैसे शिक्षा शास्त्रियों की निर्भीकतापूर्ण भूमिका वस्तुतः प्रेरक रहेगी।

आदर्श राज्य की कल्पना आप जैसे ईमानदार एवं अनुभवो द्वारा ही संभव

श्री तिलकजी को राजस्थान का राज्यपाल नियुक्त किए जाने की घोषणा हुई तो उन्होंने दिल्ली जाकर गृहमन्त्री श्री चरणसिंह से भेंट कर स्पष्ट कहा कि वे इस आयु में किसी पद का निर्वाह करने के कदापि अभिलाषी नहीं हैं। उन्होंने घोषणा भी कर दी कि वे दल के रचनात्मक कार्यो में ही रुचि लेंगे। किन्तु बाद में श्री चरणसिंहजी आदि ने कहा कि यदि राज्यपाल जैसे पद पर उन जैसे ईमानदार तथा अनुभवी व्यक्ति नहीं होंगे तो 'आदर्श राज्य' की कल्पना कैसे साकार हो सकती है।

श्री तिलकराज जी के सामाजिक विचार

व्यापारी वर्ग "ईमानदारी की कमाई का महत्व" एवं 'बेईमानी की कमाई का कुपरिणाम' समझकर जब तक कर्त्तव्य पालन की भावना से काम नहीं करेगा तब तक देश प्रगति नहीं कर सकता साथ ही व्यापारी वर्ग के समक्ष आने वाली कठिनाईयों के निदान हेतु रचनात्मक व व्यावहारिक रुख भी अपनाया जाना वितान्त आवश्यक है।

दहेज उन्मूलन पर आपका दृढ़ मत है कि समाज को संगठित कर उसे दहेज जैसी कुरीति से मुक्त कराने की सबसे ज्यादा आवश्यक है।

अग्रबन्धु परिवार ऐसे महान दृण निश्चियी, ईमानदार एवं अनुभवी विभूति को बधाई देता है। और माननीय श्री तिलक जी का अभिनन्दन करता है।

—सम्पादक

श्री तिलकजी को सभी का अनुरोध स्वीकार करना पड़ा तथा उन्होंने जयपुर जाकर कार्यभार संभाल लिया। जयपुर में राज्यपाल पद की शपथ ग्रहण करते समय उन्होंने स्पष्ट आश्वासन दिया कि भ्रष्टाचार के उन्मूलन तथा राज्य को स्वच्छ प्रशाशन देने की दिशा में वे यथाशक्ति प्रयास करेंगे।

मेरठ में नेहरू अकादमी ने उनके सम्मान में समारोह आयोजित किया तो उसमें भी उन्होंने यही कहा, "मैं गांधीजी का एक छोटा-सा अनुयायी हूँ। राजभवन जैसे भव्य प्रसाद में कितने दिन रह पाऊंगा कहना कठिन है।" अकादमी के प्राधानाचार्य श्री इन्द्रचन्द्र मित्तल ने शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए कहा था—"जब तक प्रशासन व उच्च स्थानों पर सादगी व सरलता की मूर्ति तिलकजी जैसे महापुरुष नहीं होंगे तब तक देश का कल्याण असम्भव है।

अग्रोहा निर्माण एवं इतिहास प्रकाशन

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन की अंतरंग समिति की बैठक रविवार एक मई, १९७७ को नई दिल्ली में सम्मेलन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री बद्रीप्रसाद जी अग्रवाल की अध्यक्षता में आरम्भ हुई। बाद में देर से पधारने पर अध्यक्ष श्री श्रीकिशन मोदी जी ने अध्यक्षता की।

सर्वप्रथम अग्रोहे के मानचित्र और उसके निर्माण कार्य की प्रगति पर विचार हुआ। इस पर उपस्थित महानुभावों ने अपने सुझाव दिए और विचार व्यक्त किए। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि काफी समय हो गया है। आरोप-प्रत्यारोप के अतिरिक्त अग्रोहे में कोई कार्य नहीं हुआ है। इसलिए अध्यक्ष पद से मैं अपना इस्तीफा देने को तैयार हूँ और अग्रोहे में निर्माण कार्य कराने के लिए संयोजक के रुप में कार्य करना स्वीकार करता हूँ। इस पर श्री तिलकराज जी अग्रवाल ने घोषणा की कि मैं एक वर्ष के अंदर-अन्दर ५ लाख रुपए का निर्माण कार्य करुंगा। इस रुपये को एकत्रित भी मैं स्वयं करुंगा। साथ ही यह भी स्वीकार किया कि मास्टर प्लान के अनुसार बी-भाग, जिसमें धर्मशाला आदि हैं, १५ मई, १९७७ को शुरू करके यदि १५ महीने के अंदर ५ लाख रुपए का निर्माण कार्य नहीं करूंगा तो अपने आपको संयोजक पद से अलग समझूँगा। पानी का प्रबन्ध तथा धर्मशाला का कार्य प्रारम्भ करूगा।

श्री तिलकराज जी अग्रवाल के अनुसार सर्वसम्मति से निर्माण कार्य के लिये निम्नलिखित सदस्यों की एक हाई-पावर कमेटी बनाई गई। श्री देवी सहाय जिन्दल, प्रो० रामसिंह, श्री मूलचंद गुप्ता, श्री बाबूलाल सलमेवाले, श्री रामशरण मिचनाबाद वाले। श्री तिलकराज जी अग्रवाल ने स्वीकार किया कि मैं इस हाई-पावर कमेटी के आदेशानुसार कार्य करुंगा। साथ ही निश्चय हुआ कि हिसार के बैंक में श्री शुभकरण चूरवाला, श्री सुरेश अग्रवाल के हस्ताक्षरों से खाता खोला जाए तथा हाई-पावर कमेटी जो भी नक्शे आदि पास करेगी तथा निर्माण कार्य करेगी, उसकी सूचना समय-समय पर कार्यकारिणी समिति को दे देगी।

विचार-विमर्श के पश्चात् सर्वसम्मति से तय पाया कि अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति की आगामी बैठक तथा वार्षिक साधारण सभा की आगामी बैठक दिसम्बर, १९७७ के अंत तक की जाए।

अध्यक्ष के नाम श्रीमती स्वराज्यमणि अग्रवाल का पत्र पढ़ कर सुनाया गया। इस पत्र पर विचार करते हुए सर्वसम्मति से तय पाया कि श्रीमती स्वराज्यमणि अग्रवाल द्वारा लिखित इतिहास की पुस्तक को सम्मेलन अपने व्यय पर प्रकाशित करेगा और श्रीमती स्वराज्यमणि अग्रवाल का इसकी तैयारी पर ५०००/- रुपया जो खर्च हुआ है, वह सम्मेलन देगा। इस पुस्तक का कापी राईट तथा मालिकाना अधिकार अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के होंगे। श्रीमती स्वराज्यमणि अग्रवाल द्वारा इतिहास से सम्बन्धित कार्य को सम्पन्न करने के लिए उन्हें धन्यवाद दिया गया, उनकी प्रशंसा की गई और तालियों के साथ उनका सम्मान किया गया।

सर्वसम्मति से तय पाया कि संसद के नये अग्रवाल सदस्यों का सम्मान सम्मेलन की ओर से किया जाए। इसकी व्यवस्था का भार महामंत्री को दिया जाए।

आज की ज्वलन्त समस्या पर एक परिचर्या

दहेज मेरी नजर में

आयोजक—देवेन्द्र जैन सिंघल "काव्यप्रवीण"
अध्यक्ष श्री अग्रवाल युवा बुद्धिजीवी संघ
दलिया बाजार, इन्दौर

दहेज ! दहेज !! दहेज !!! आप चाहे दैनिक पत्र उठाकर पढ़े या साप्ताहिक। होटलों में बैठे हों या ट्रेन में सफर कर रहे हों। हर जगह आज एक ही चर्चा है दहेज प्रथा समाज का कलंक है। यह बन्द होनी चाहिए। जी हाँ—हम भी कहते हैं—यह बन्द होनी चाहिए। परन्तु क्यों ? क्या यह वास्तव में कलंक है क्या इसके प्रचलन के पीछे हमारे पूर्वजों का अज्ञान छिपा था ? क्या इसका पहले भी कभी बहिष्कार किया गया था ? यदि नहीं, तो यह हमारे आँख की किरकीरी कब और कैसे उत्पन्न हुई।

दहेज आज चर्चा का एक प्रधान विषय बन गई है। कुछ परिस्थितियाँ ही ऐसी निर्मित हो गई हैं कि जितनी तीखी आलोचनाओं का शिकार आज की युवा पीढ़ी बन रही है उससे अधिक बुजुर्ग पीढ़ी बन रही है।

इस द्वन्दात्मक चरित्र को देखकर मैं सोचता रहा हूँ और जब यह जानने में असमर्थ रहा कि आखिर प्रश्नों का हल क्या होगा, तो मैंने अपने इर्द-गिर्द के कुछ लोगों से सम्पर्क स्थापित किया। व्यक्तिगत तथा पत्रों के माध्यम से। दोनों पक्षों के विचार जानना आवश्यक था इसलिये परिचर्या के दौरान मैंने यह ध्यान में रखा कि अनुभवी व्यक्तियों को ही इसमें शामिल किया जाय। कुछ महत्वपूर्ण लोगों के विचार ही यहाँ प्रस्तुत कर पा रहा हूँ। इसमें से कुछ बुजुर्ग, और कुछ युवा पीढ़ी के हैं। यों समझिये पक्ष-विपक्ष दोनों के विचारों को आपके समक्ष रख कर यह सोच रहा हूँ शायद इससे कोई हल निकल सकें।

दहेज भीख का दूसरा रूप

इस सिलसिले में सर्वप्रथम मेरी मुलाकात इन्दौर वि. वि० की कार्यकारिणी के सदस्य एवं वैष्णव वाणिज्य महाविद्यालय के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री रमेश बसल से हुई। आप अग्रवाल युवा बुद्धिजीवी संघ एवं समाज की कई संस्थाओं के मंत्री भी है। आप ४-५ वर्षों से समाज की सेवा कर रहे हैं। एक प्रभावी एवं लोकप्रिय छात्र नेता के साथ श्री बंसल कर्मठ एवं सामाजिक कार्यकर्ता है। 'आज की युवा पीढ़ी ने दहेज के विरुद्ध कार्य करने की दृढ़ प्रतिज्ञा करली है।" उक्त कथन के साथ ही उनके विचार उन्हीं के शब्दों में प्रस्तुत कर रहा हूँ।

दहेज मात्र एक घुन के समान कीड़ा है जिसने समाज को ही नहीं वरन् सम्पूर्ण राष्ट्र को झकझोर कर रख दिया है, आज सभी ओर दहेज के नाम त्राहि-त्राहि मची हुई है ऐसा लगता है लड़के वालों का इस आवाज से कोई सम्बन्ध ही नहीं हो।

वास्तव में दहेज माँगा जाता है जो किसी भीख से बढ़ कर नहीं है, पुराने समय में स्वेच्छा से धन दिया जाता था अत: मेरे विचार से लड़के वालों को माँग नहीं करना चाहिये।

आज समाज में दहेज सम्बन्धी कई भ्रम फैले हैं उन्हें दूर करना चाहिये। कोई अगर दहेज रहित विवाह करता है तो उसका सामाजिक सम्मान करना चाहिये, प्रशंसा करनी चाहिये जबकि वर्तमान स्थितियों में ऐसे युवाओं की खिल्ली उड़ाई जाती है।

आज की युवा पीढ़ी तो दहेज प्रथा का अन्त करने को दृढ़ प्रतिज्ञ है सिर्फ उसे समाज से और बुजुर्ग पीढ़ी से सहयोग की अपेक्षा है, अगर कोई व्यक्ति दहेज की माँग करता है तो उसे बहिष्कृत कर देना चाहिये।

दहेज : दानव रूपी जानवर

और जब मैं भाई रमेश की ही आयु की एक अन्य सेविका से मिला एवं उनके विचार ज्ञात किये तो यही अन्दाज लगा सका कि वास्तव में 'दहेज एक दानव है।" एम० ए० में अध्ययनरत एवं नूतन कन्या महाविद्यालय की अध्यक्षा कुमारी कलावती जिंदल जो कि विगत ४-५ वर्षों से युवतियों को संगठित करने में अपना सहयोग प्रदान कर रही हैं एक कुशल समाज सेविका हैं। साथ ही वक्ता भी हैं। समाज में ही नहीं देश के निर्माण में भी आप अपना योगदान दे रही हैं। तो चलें आपसे भी मुलाकात कर विचार ज्ञात करें :—

मेरे विचार से दहेज तीन कुशब्दों से बना है। 'द' का अर्थ दानव, 'हे' से हेय दृष्टि से देखा जाने वाला और 'ज' का अर्थ जानवर अर्थात् दहेज का अर्थ हुआ 'हेय दृष्टि से देखा जाने वाला दानव रूपी जानवर।' दहेज वह विकराल दानव है जिसने समाज की जड़ को खोखला बना दिया है। यह वह भूखा जानवर है, जिसकी जितनी क्षुधा पूर्ति की जाय उसकी भूख उतनी ही बढ़ती जाती है। मेरे विचार से युवक दहेज इसलिए लेना चाहता है कि बंधी बंधाई रकम उसे बिना मेहनत के प्राप्त होती है साथ ही वह अपने मित्रों में अपनी शान को बढ़ा-चढ़ा कर प्रकट करना चाहता है। युवती दहेज इसलिए पसन्द करती है क्योंकि ससुराल में उसकी ननंद, जेठानियों से प्रतिस्पर्धा तथा अन्य सहेलियों की तुलना में स्वयं के दहेज के माध्यम से सम्पन्न बताना चाहती है।

दहेज प्रथा की यह प्रकृति सम्पन्न परिवारों में अधिक पाई जाती है मध्यम परिवार इसका अनुकरण करते हैं और यही प्रतिस्पर्धा समाज में आर्थिक स्थिति को निम्न करती है। व्यक्ति के मानसिक स्तर को चिन्ता ग्रस्त करती है और इन्हीं सब दुष्परिणामों से त्रस्त हो कई युवतियाँ या तो आत्महत्या कर लेती हैं या बेमेल

विवाहों में, अपराधों की संख्या में, बाल विवाह की संख्या में, पारिवारिक संघर्ष में वृद्धि होती है।

दहेज एक विशैला जहर है।

एम० ए० की छात्रा कु० सुधा गर्ग (देवरिया) के विचार कुछ-२ उपरोक्त विचारों से भिन्न हैं वे कहती हैं कि दहेज एक ऐसा जहर है जो समाजकी जड़ोंको खोखला करता चला जा रहा है। दहेज प्रथा के कारण कितनी ही योग्य एवं कुशल युवतियों का विवाह अपढ़, अयोग्य एवं वृद्ध व्यक्तियों के साथ कर उनका जीवन नरकीय बना दिया जाता है। स्वतन्त्र भारत के संविधान में सभी के लिये समानता एवं स्वतन्त्रता का मौलिक अधिकार सुरक्षित है तब यह भेदभाव क्यों ? क्या केवल इसलिए.....कि पुरुष वर्ग में जन्म लेने के कारण उनका समाज में उच्च स्थान है तथा लड़कियों का निम्न, चाहे वे कितनी ही योग्य क्यों न हों....। युवा वर्ग समय की पुकार को सुने अपने उत्तरदायित्व को समझे, स्वावलम्बी बने....तभी सदियों से पल्लवित, पुष्पित प्रथा का समूल नाश हो पायेगा।

दहेज मानवीय मूल्यों का ह्रास

अर्थशास्त्र एवं वाणिज्य की उच्च शिक्षा प्राप्त प्रो० हुकमचन्द अग्रवाल (जबलपुर) सेक्सरिया महाविद्यालय में पिछले पच्चीस वर्षों से अध्ययन कर रहे हैं। एक प्रभावी एवं लोकप्रिय शिक्षक के साथ प्रोफेसर अग्रवाल कर्मठ एवं सामाजिक कार्यकर्ता है तथा एक प्रबुद्ध व्यक्ति के रूप में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेखों के माध्यम से सामायिक विषयों की मीमांसा करते हुए जन सामान्य का मार्गदर्शन करते हैं। प्रस्तुत विषय पर व्यक्त उनके विचारों में उपरोक्त गुण परिलक्षित होते हैं।

विवाहों में सौदेवाजी के रूप में लड़के लड़कियों का क्रय - विक्रय अत्यन्त दुभाग्यपूर्ण है। लेन देन और दहेज के आधार पर निर्मित संबंध न केवल अस्थायी होते हैं वरन् उनमें प्रेम, असहयोग और सद्भावना का नितान्त अभाव होता है। इस अभिशप्त प्रथा के कारण कितने ही घरों की अनब्याही युवतियाँ सपनों के सहारे निराशा, घुटन और उपेक्षित जिन्दगी जी रही है। इसका क्या अन्त होगा अनुमान लगाना कठिन नहीं है। यदि इस भीषण तथा विपरीति परिस्थिति में इन ललनाओं से कुछ अपेक्षित हो जाय तो क्या यह समाज की जिम्मेदारी नहीं है ? समाज और इसके कर्णधारों को उत्तर देना चाहिये।

दहेज एक घिसा पिटा शब्द है :

इन्दौर के ल्युविकेन्ट के प्रसिद्ध व्यवसाथी एवं साइंसकी शिक्षा प्राप्त श्री मुरली मनोहर बंसल विगत कई वर्षों से समाज की तन-मन-धन से सेवा कर रहे हैं। वर्तमान में आप मध्यभारत अग्रवाल सभा के उपमंत्री हैं। एक प्रभावी साहित्यकार के साथ-साथ श्री बंसल एक कर्मठ एवं कुशल कार्यकर्ता हैं। लीजिए प्रस्तुत हैं आपके विचार जिनसे मैं ही नहीं शायद आज का अधिकतम युवा वर्ग सहमत होगा।

वास्तव में 'दहेज' अत्यन्त ही घिसा-पिटा शब्द है जिस पर काफी विचार एवं लेखनी चल चुकी है। किन्तु अब तक के सभी प्रयास निष्फल नजर आये हैं। यहां तक कि जिस भी नवयुवक ने इस विषय पर कदम उठाया, उत्साह दिखाया, वह अपने आपको इस अभिशाप से नहीं बचा पाया। जिस विवाह में दहेज के रूप में धन अधिक प्राप्त होता है, वहां उस परिवार को समाज मे सम्मान भी मिलता है। मतलब यह है कि दहेज एक सम्मान व धन की प्राप्ति है।

यदि कोई व्यक्ति साहस के साथ यह बतावे कि अमुक शहर में दहेज लेने की वजह से अमुक व्यक्ति का समाज ने बहिष्कार किया अथवा अपमानित किया। नहीं, कोई सामने आने को तैयार नहीं। यहां तक कि दहेज प्रथा के विरोध में भाषण देने वाला व्यक्ति भी आदर्श की बात करके बैठ जाता है लेकिन उसका यह साहस नहीं कि वह कहे– अमुक व्यक्ति ने इतनी बड़ी राशि दहेज में ली, समाज के मंच से मैं उसका घोर विरोध करता हूँ।' ऐसे नेताओं से जब चर्चा होती है तो वे प्रायः यही कहते हुये पाये जाते है कि बुराई किससे लेवें। ठीक है तो फिर आप दहेज की बात क्यों करते हैं?

आज स्थिति उसी प्रकार की है कि एक बहुत विशाल सुन्दर घोड़ा-गाड़ी है, लेकिन खींचने वाला घोड़ा अक्षम है, दूसरी और जर्जर खच्चर गाडी है, लेकिन चलती गाडी में ही इन्सान बैठता है, क्योंकि उसे मंजिल पार करनी है। ऐसी ही स्थिति अधिकांश लड़की के पिता की होती है कि विवाह में अनिच्छा से भी दहेज की व्यवस्था करनी पड़ती है, इसलिए नौजवान दोस्तों अपनी शक्ति संगठन में लाएं, डट जाइये मैदान में पवित्र इरादों के साथ, सद्भावना के साथ। ईश्वर आपको, हम सभी को सफलता प्रदान करेगा।

अब मैं उपरोक्त विचारों को सुनकर यही सोच रहा हूं कि शायद कुछ हल शीघ्र निकल सकेगा। यह सच है आज किसी भी व्यक्ति को समझना कठिन है। व्यक्ति एक ओर नेतागिरी के लहजे में मंच से दहेज का विरोध करता है पर स्वयं प्रतिज्ञा नहीं करता। तो दूसरी ओर दहेज लेने में कोई कसर नही छोडता। तो क्यों न इन लोगों को समाज से निकाल दिया जाय। उन्हें भी जमीन पर बिठाया जाय तथा मंच पर उस व्यक्ति को बिठाया जाय जिसने दहेज रहित विवाह किया हो। तो आइये हम प्रतिज्ञा करे न दहेज लेंगे न देंगे। इसी आशा के साथ अब विदा चाहता हूँ।

भारत भूमि महान

–प्रयाग नारायन अग्रवाल, बाँदा

कौन धर्म है कौन संस्कृति
गीता और कुरान।
इनका तत्व एक में रक्खा
भारत भूमि महान॥

निज का करें समर्पण अर्पण,
कहता पृथ्वी का विज्ञान।
साथी ज्योतिर्मय पथ के हैं,
प्रतिक्षण के मुस्कान।
निज अभिमान मन की गरिमा की है
निज में शान इनका तत्व····

सुख सौरभ की हरियाली में
जीवन-ज्योति जलाने को।
निज का जीवन करें समर्पित,
'शस्य-श्यामला' लाने को,
सच्चे जीवन का दर्शन पा
प्रगटें सब विद्वान॥ इनका तत्व ···

सुख की संचित जिज्ञासा में,
श्रम से सूर्य सदा खिलता है।
विमल संस्कृति की गीता से,
ऊंचा ज्ञान सदा मिलता है॥
प्रगति पथ स्वावलम्ब हो
नव निर्मित संधान। इनका तत्व ···

पथ प्रशस्त, उसका जीवन में,
जो निज का उपहार लुटाये।
हर्षित होवे पथ दर्शन पा,
अंधकार को दूर भगाये॥
ज्योतिमय होवे जीवन पथ,
कर दो जीवन दान। इनका तत्व····

भारत मां की सच्ची सेवा,
उसकी धरती स्वर्ग बना दें।
जन जीवन को ज्योतिर्मय कर,
स्नेहमयी सरिता को ला दें॥
पुण्य धरा के धन्य भाग्य हों,
सफल करें अभिमान। इनका तत्व····

दो तीखे तीर

: १ :

गांव में जब
नेता जी वोट मागने
पहुचे
तो दोनों हाथ जोड़
कर नंगे पांव थे।
गोबर में पाँव सने थे
और गांव की सफाई
के लिए मेहतर
की तलाश कर रहे थे
कि पीछे से
कुछ युवक बोले
आप आज पांच साल
बाद आगये
बस सफाई ही समझो।

: २ :

तस्करी में पकडे गये
एक तस्कर से
लोगों ने पूछा कि श्रीमान जी
तस्करी का राज बताओ
कि तस्करी कैसे करते हैं?
तस्कर मुस्कराकर बोला
सलामत रहे नेता गीरी का जहाज
फिफ्टी-फिफ्टी करते हैं।

—मदन मोहन उपेन्द्र, मथुरा

जिन्दगी

—एक उर्दू कहानी

—अन्सारी कनीज फातमा अन

आज छुट्टी का दिन है। शाम के वक्त मौसम पर यूँ ही थोड़ी सी रंगीनी छा गई है। वह बरामदे में कुर्सी डाले बैठी हुई है हाथ में फ़िलोसफी की कोई किताब है लेकिन ख्यालात बिखरे हुए। सामने के फ्लेट में शशी की बर्थ-डे पार्टी का हंगामा अभी खत्म हुआ है, लेकिन उसके दोस्तों का जमघट अभी कम नहीं हुआ है और वह अभी इस सवाल को हल करने में नाकाम है कि जिन्दगी कहकहों का नाम है या सूनेपन का?

वह जब बिलकुल तन्हा होती है जब दुनिया की कोई शय भी उसके सामने नहीं होती शायद वह अपने वजूद से भी बेखबर होती है, तो उसे अपने उलझे हुए सवाल का जवाब एक हकीकत के रुप में सामने होता है कि 'हाँ, जिन्दगी सूनेपन ही का नाम है। लेकिन आज उसे फिर इस हकीकत पर शक होने लगा है। उसकी आँखों के सामने जिन्दगी अपने पूरे जीवन के साथ नाच रही है। लेकिन उसे यह सब कहकहे खोखले और बनावटी लग रहे है। और उसे अपने सूनेपन में असलियत दिखाई देती है, जहां एक मुसलसिल बेचैनी के साथ साथ एक नामालूम सा सूकुन भी है।

वह बचपन से यतीम है। पांच साल पहले माँ ने भी उससे मुँह मोड़ कर सितारों की दुनिया आबाद कर ली। माँ जो उसका वाहिद सहारा थी, माँ जो उसकी तन्हा राजदार थी, माँ जो उसका अटूट विश्वास था। मगर अब उसका विश्वास टूट चूका था फिर वह अपनी जिन्दगी पर भी कैसे विश्वास कर सकती थी? वह तो मरना चाहती थी, लेकिन जिन्दगी ने उसे जीने पर मजबूर किया था। उसे जिन्दगी से नफरत थी सख्त नफरत। वह खदकशी करना चाहती थी मगर खुदकशी तो बहुत बडा गुनाह है और उसने जिन्दगी में कभी गुनाह नही किया, फिर ये गुनाह कैसे कर लेती? आरजू को तो उसने सिर्फ ख्वाब का नाम दे रखा था, ख्वाब जो पल में टूट जाता है। उसने तो जिन्दगी में सिर्फ एक ही आरजू की थी, फिलोसफर बनने की। उसका सब्जेक्ट भी तो फिलोसफी ही था। मगर खुदा उसकी इतनी सी ख्वाहिश पूरी करने के लिए भी मजबूर था। उसका सहारा छिन गया और जिन्दगी ने उसे मजबूर किया एक कलर्क बनने पर। जिन्दगी उसके लिए एक फरेब थी, लेकिन वह जीती रही।

अचानक उसके ख्यालात का ताँता टूट गया। एक नन्हा-मुन्ना हाथ उसके सामने फैला हुआ था। उसने नजरें उठाई और देखा एक नौ साल की चिथड़ों में लिपटी गुड़िया सी लड़की आस भरी निगाहों से उसे देख रही थी। उसने बेख्याली में पूछ लिया, "क्या चाहती हो?" उसके नाजुक से होठ काँपे और एक कमजोर सी आवाज आई "मौत"। वह सन्नाटे में आ गई। उसे अपने कानों पर यकीन न आया। उसने पलकें झपका कर उसकी मासूम सी आंखों में झांका, जहाँ उसे हकीकत नजर आई उसने अनजाने में कह दिया. 'मौत इतनी सस्ती नहीं गुड्डी।" लड़की उसका मतलब समझे बगेर सामने पहुची और वह उसे खोई खोई सी देखती रही एकाएक उसने सुना, शशी कह रही थी, "अरे ये भी नहीं चाहिए, तो फिर क्या चाहिए तुझे? और लड़की ने वही बात दुहराई मैं मरना चाहती हूँ।" अरे शशी छोड़ो,

पागल लड़की हैं किसी ने हाँक लगाई। पागल वागल कुछ नहीं। माँ–बाप ने मांगने का अच्छा ढंग सिखा दिया है ताकि लोग रहम खा कर कुछ ज्यादा ही भीख दें।' महेन्द्र ने अपनी अक्ल का बहुत जल्द इस्तेमाल किया। "अरे भई, पिक्चर शुरू हो जाएगी, जल्दी चलो। बेला ने बेताबी से कहा। और वह सब कार में बैठ कर चल दिए और लड़की तरसती निगाहों से उन्हें देखती रह गई।

वह बैठी यह सारा तमाशा देख रही थी। उसका दिमाग आउट हो चुका था। आखिर उससे रहा न गया। उसने लड़की को अपने पास बुलाया। लड़की की आँखों में उम्मीद की हलकी सी किरन चमकी। उसने लड़की को अपने पास ही जमीन पर बिठा लिया और टिकटिकी बाँधे उसका चहरा देखने लगी। "तुम मरना क्यों चाहती हो?" थोड़ी देर बार यह सवाल उसके मुँह से निकला।" मेरी माँ ने मुझे आज खूब मारा था और बोली" कम्बख्त जा किसी मोटरगाड़ी में दब कर मर जा। मेरी ही जान खाने क्यों पैदा हुई?' सड़क पर से मेरे को पुलिस वाले ने डंडा मार कर भगा दिया कि जा कर भीख माँग तो मैं यहाँ तुम से भीख माँग रही हूँ मौत की क्योंकि मेरी माँ ने मरने के लिए कहा था।" लड़की रोये रोये अन्दाज में यह सब कुछ कर रही थी, असकी आँखों में भी आँसू आ गए लेकिन वह जलदी से छुपा गई। "कहाँ रहती हो" "मजदूर बस्ती में, फूटपाथ पर'। "बाँप क्या करता है?' "चरस बेचता था। पुलिस ने जेल में बन्द कर दिया।" "माँ क्या करती है?" कुछ भी नही"। "कोई बड़ा भाई है?" नहीं पाँच बहनें हैं और तीन छोटे भाई हैं। तीन दिन से हमको खाना नहीं मिला मेरा छोटा भाई कल भूख के मारे मर गया। मेरी बड़ी बहन आज किसी के साथ भाग गई और मेरी मां तब से हम सबको मार मार कर घर से निकाल रही है।" लड़की उसकी शह पा कर हर बात अपने मासूम अन्दाज में बता गई। वह उसकी बेबसी मजबूरी और मासूमियत देख कर हैरान थी। अब जिन्दगी अपने तीसरे रूप में उसके सामने खड़ी कहकहे लगा रही थी। जिन्दगी का ये रुप भी हो सकता है यह उसके ख्वाब व ख्याल में भी न था। 'क्या जिन्दगी इतनी जालिम भी है जो इस नन्ही सी बच्ची की बीत रही है या उतनी हसीन जो शशी की बीत रही है या इतनी ही बेलुफ्त जो मेरी अपनी बीत रही हैं?' वह जितना इस सवाल को सुलझाना चाहती थी उतना ही उलझ रही थी। लड़की उसे टिकटिकी बाँधे देख रही थी। उसकी निगाह उसके चहेरे पर पड़ी जो एक मुर्झाए हुए फूल की तरह जर्द था। उसे उसकी भूख का एहसास हुआ और वह अन्दर से जाकर ब्रेड का पैकेट उठा लाई। लड़की की आँखें चमक उठीं। भूख का एहसास उसकी मौत के एहसास को पल भर में कुचल गया और वह भूखी शेरनी की तरह अपने खुराक पर झपट पड़ी।

उसने लड़की को सामने सड़क पार करते हुए देखा, तब उसे वक्त का एहसास हुआ। उसका दिमाग कुछ भी सोचने के लिए तैयार न था। "क्या वह उस लड़की की कोई मदद नहीं कर सकती?" लेकिन दूसरे ही लम्हे उसे ख्याल आया, "वह तो खुद मजबूर है और मजबूर किसी और की मदद कैसे कर सकता है?"

दहेज का दानव

डा० भगवतशरण अग्रवाल
मन्त्री
अग्रवाल समाज, अहमदाबाद

अपने देश के लोगों में दो कमजोरियां विशेष रुप से देखी जा सकती हैं। एक तो परिश्रम से जी चुराना और दूसरे कथनी और करनी में अंतर।

दहेज के ऊपर अब तक सैकड़ों लेख लिखे जा चुके है। पिछले सौ वर्षों का देश की विभिन्न भाषाओं का कथा साहित्य और नाट्य साहित्य, इस समस्या के विभिन्न पहलुओं से उत्पन्न करुणा जनक प्रसंगों से भरपूर है। अनेक फिल्में और रेडियो कार्यक्रम, इस समस्या के भीषण दुष्परिणामों पर प्रस्तुत हो चुके हैं। किन्तु फिर भी इस दानव के दाँत टूटे नहीं है। आखिर इसका कारण क्या है ? इसका कारण है हमारे देश में नैतिकता की कक्षा में गिरावट और हमारी कथनी तथा करनी में अंतर।

आज इसे एक राष्ट्रीय समस्या के रुप में लिया जा चुका है और कुछ राज्यों ने इस पर प्रतिबन्ध भी लगा दिये है। कुछ राज्य इस ओर क्रियाशील हैं। फिर भी मुझे भय है कि जब तक हम स्वयं इसके विषय में प्रतिज्ञा बद्ध नहीं होंगे, कानून अकेला इस समस्या को नहीं सुलझा पायेगा।

मैंने देखा हैं कि अपने समाज में लड़के का विवाह करते समय हमारा दिमाग एक विशेष विकृत अहम से पीड़ित रहता है और लड़की का विवाह करते समय हम बड़े दयनीय और सिद्धान्त वादी बन जाते है। लड़के के विवाह में हम बड़े गर्व के साथ कहते हैं कि इतना मिला, इतना और मिलने वाला है, बारात की इतनी खातिर हुई और उसी के अनुसार आने वाली बहू को मान मिलता है। यदि दहेज अच्छा मिला तो वधू के शारीरिक और आंतरिक दुर्गुण भी, गुण जैसे लगते हैं। चाँदी का जूता वास्तव मे बड़ा प्रभावशाली होता है। जितना अधिक पड़ता हैं उतना ही अधिक मीठा लगता है।

वास्तव में दहेज के दानव से लड़ने के लिए और विजय प्राप्त करने के लिए, हमे अपने नैतिक स्तर को ऊपर उठाना होगा। भावना को जागृत करना होगा। नवयुवकों और नवयुवतियों को इसमें आगे आना होगा। त्याग करना होगा। अपने पैरों पर खड़े होने का आत्मविश्वास जागृत करना होगा। उन बहनों के करूण जीवन पर विचार करना होगा, जिनके दहेज के कारण या तो अनमेल विवाह हुए अथवा जिनके माता-पिता दहेज के लिए, लिए गए कर्ज से थके बैलों की तरह असमय में ही मृतक जैसे हो गये।

वास्तव में इस में थोड़ा दोष लड़की वाले का भी होता है। वह अपनी लड़की को अपने से अच्छी हैसियत वाले घर देकर, उसे सुखी देखना चाहता है। कुछ लोग काले–धन के बल पर इसे भी व्यापार की श्रेणी में रखे हुए हैं। कुछ लोग समाज में झूठी प्रतिष्ठा के लिए अधिक दहेज देते हैं। कभी कभी अपंग अथवा कुरुप लड़की से मुक्त होने के लिए अधिक दहेज दिया जाता है। काश उसे उचित शिक्षा देकर आत्मनिर्भर बनाने की ओर ध्यान दिया जाता।

लड़के के जन्म लेने पर काँसे की थाली और लड़की के जन्म लेने पर तवा पीटने की प्रथा वास्तव में, हमारी पूज्य देवियों माँ दुर्गा, पार्वती, सीता इत्यादि का अपमान करने जैसा है। जिस दिन हम दहेज के दानव से मुक्त हो जायेंगे, पुत्री बोझ के समान नहीं लगेगी और उसके जन्म लेने पर, तवा पीटना भी बन्द हो जायेगा।

बहुत से लोग यह तक करते है, कि हमारे पास धन है और हम अपनी सुपुत्री के विवाह में खर्च करना चाहते हैं दामाद को देना चाहते है, तो फिर उस पर प्रतिबन्ध क्या ?

उत्तर में यह कहा जा सकता है कि कोई भी ऐसा कार्य, जिसका समाज पर बुरा प्रभाव पड़े, वर्ज्य होना चाहिए। समाज का निम्न और मध्य वर्ग, उच्च वर्ग का अनुकरण करता है। दूसरे जो धन, जिस सीमा में खर्च किया जा रहा है, वह वास्तव में कानूनी रूप से सफेद धन है, इस पर शंका उत्पन्न होती है। समाज से अर्जित किये हुए धन का केवल अपने लिए ही नहीं, समाज और देश के लिए भी सदुपयोग करना चाहिए। और जब तक हम सभी, विशेषकर अपनी जाति के व्यापारी बन्धु इस सत्य को अच्छी तरह समझ नहीं लेगा, सामाजिक घर्षण होते ही रहेंगे। एक ऐसा समय भी आ सकता है जबकि हमें सम्पूर्ण धन गुमा देना पड़े।

इसलिए आज इस बात को खूब अच्छी तरह समझ लेने की आवश्यकता है कि दहेज प्रथाको जिसने हमारे समाज को नैतिक दृष्टि से खोखला ही नहीं किया है बल्कि सैकड़ों वर्षों से जो नारियों के लिए, उनके माँ-बाप के लिए अभिशाप बना हुआ है, समाप्त करना ही समाज के हित में है। इसके लिए कानूनी प्रतिबन्ध अपने स्थान पर काम करेगा। किन्तु प्रत्येक समाज के नेताओं, बुजुर्गों और अग्रणी सम्माननीय व्यक्तियों का भी यह कर्त्तव्य है कि वे समय की पुकार को समझें। अपने समाजों के सम्माननीय पदाधिकारी समाज में इस प्रकार की भावना जगाये जिससे नवयुवक, नवयुवती और उनके माता पिता कानून के भय से नहीं, बल्कि आत्मा की पुकार समझकर, मानवता का आह्वान समझकर और नैतिकता पूर्ण कर्त्तव्य समझकर इस दानव को समाप्त करने के लिए तन, मन, धन से कटि बद्ध हो। त्याग और प्रेममय जीवन की ओर उन्मुख हो, तथा सबके विकास में सहयोगी बन कर अपना विकास करें।

जय अग्रसेन महाराज, जय अग्रवाल समाज।

सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्—

एक पौराणिक कथा

—डा० स्वराज्यमणि अग्रवाल, जबलपुर

अरुणास्पद नामक नगर में वरुणा नदी के किनारे एक अत्यत हृष्ट-पुष्ट, स्वाभिमान ब्राह्मण निर्जन कुटी में निवास करता था। वह समस्त वेद, वेदान्त का ज्ञाता, शान्त स्वभाव वाला, चरित्रवान नवयुवक के नाम से अपने गाँव में प्रसिद्ध था। अतिथि सेवा ही उसका मुख्य कर्म था।

देश-देश से साधू, सन्त, सज्जन गण आते, उसकी कुटिया में विश्राम पाते, उसका आतिथ्य ग्रहण करते और उसे आशीर्वाद देते हुए लौट जाते थे। वह किसी से कुछ नहीं माँगता था।

एक दिन उसके मन में भी भ्रमण की इच्छा उत्पन्न हुई। उसने सोचा कि जब तक ईश्वर की बनाई सम्पूर्ण सृष्टि का दर्शन न करलें यह जीवन व्यर्थ है। ईश्वर ने इस पृथ्वी को कितने झरनों, उपवनों, वनों, नदियों आदि से सुशोभित कर रक्खा है, और मैं यहाँ बैठा केवल अतिथि सत्कार में ही अपना जीवन व्यर्थ कर रहा हूँ। फिर भी उसकी अतिथि -सत्कार की इच्छा कम नहीं हुई। वह अपने कार्य में रत अपनी अभिलाषा को छिपाये अधिक कर्मठता से अतिथियों की सेवा करता रहा।

अकस्मात एक दिन रात्रि में किसी ने उसके दरवाजे पर दस्तक दी—खट, खट, खट।

ब्राह्मण चौक कर उठ बैठा, अतिथि आया हैं, ऐसा सोच कर उसने दरवाजा खोला 'स्वागत हो अतिथि का, महाराज अन्दर आवें"। उसने नम्रता पूर्वक अतिथि का अभिनन्दन किया।

अतिथि ने एक प्याले में जल माँगा। प्यास से उनका कण्ठ सूख रहा था। ब्राह्मण ने जल देते हुए पूछा, स्वाभिमान कहाँ से आना हुआ "?

अतिथि ने कहा, "अनेक नद, नदी, पर्वत, और सभी तीर्थस्थानों का भ्रमण करता हुआ आ रहा हूँ।"

युवक आश्चर्य और उत्कंठा में भर कर बोला "महात्मन ! आप देखने में युवक लगते हैं, मुख पर भी थकान के चिह्न नहीं हैं, कैसे आप इतनी दूर की यात्रा तय करके आ रहे हैं ? अनुचित न हो तो राज बतावें।"

अतिथि मन्त्र विद्या में निपुण तथा समस्त औषधियों के ज्ञाता स्वयं धन्वन्तरि थे। उन्होंने युवक के मन की बात भाँप ली हंसते हुए बोले, "आज अभी विश्राम करने दो कल प्रातः काल तुम्हें अपनी भ्रमण विद्या का राज बताऊँगा। कहते हुए धन्वन्तरि ने जल पीकर प्यास बुझाई और युवक के बताए स्थान पर जाकर प्रगाढ़ निद्रा में मग्न हो गए। युवक धीरे-धीरे उनके श्रान्त-कलान्त पैरों को

दबाता हुआ वहीं कब निद्रामग्न हो गया उसे पता भी नहीं चला। स्वप्न में उसने देखा कि ऋषि चमत्कारिक ने उसके पैरों के तलवे पर कुछ औषधि का लेप कर दिया है और कह रहें है वत्स उठ तुझे जहां जाना हो जा। तेरे पैरों पर ये औषधि लगी है उससे तू जा। आधे दिन में सहस्त्र योजन चल सकने की इच्छा पूरी कर सकता है। हर्ष से गदगद् हो हिमालय पर्वत की सैर करने की इच्छा प्रकट की। उसने सोचा आधे दिन में हिमालय घूम कर आधे दिन पर्यन्त सूर्य सूर्यास्त के पहले ही घर वापस आ जाउंगा। उसकी मंत्रणा के अनुसार अत्यन्त सहजता से वह हिमालय की पृष्ठ भूमि पर पहुंच वहां भ्रमण करने लगा। उसने देखा कि वहाँ सिद्ध गन्धव, किन्नर आदि देवता गण सभी अपने-अपने कार्यों में व्यस्त हैं। सैकड़ों मनोहारी अप्सराऐं नृत्य कर रही हैं। अनेकों प्रकार के पक्षी कलख कर रहे हैं, कहीं झरने बह रहे हैं, कहीं नदियाँ कल-कल गान कर रही हैं। उसका मन वहां की छटा में ऐसा रम गया कि वह यह भूल गया कि हिमाच्छादित हिमालय पर चलने से उसके पैरों का लेप धुल गया है।

अचानक उसने अपने को अत्यन्त थका हुआ, क्लान्त अनुभव किया। उसने घर लौट जाने की सोची। उसे फिकर हुई कहीं कोई अतिथि आकर वापस न लौट गया हो। उसने हिमालय का बाकी भाग कल देखेगा ऐसा सोच कर द्रुतगति से वापस घर जाने की कामना की। परन्तु उसके पैर शीत से जड़ हो गए थे। लेप धुल जाने के कारण उसकी गति साधारण हो गई थी। वह मन ही मन व्याकुल हो उठा। जल्दबाजी में वह पूरी विद्या भी नहीं सीख पाया था, पुनः लेप प्राप्त करने अथवा बनाने की क्रिया भी वह नहीं जानता था। उसको अपनी अज्ञानता पर अत्यन्त क्रोध आया। उसने सोचा, "अधूरा ज्ञान दुःखदायी ही है ऋषि मुनि यह ठीक ही कह गए हैं।" वह वहाँ से पार पाने का उपाय सोचने लगा इतने में उसे दूर से एक सुन्दरी आती दिखाई दी।

ब्राह्मण बहुत देर से अकेला भटक रहा था। उस निर्जन वन में आचनक सुन्दरी को देख कर उसने चैन की सांस ली। जल्दी जल्दी उसके पास गया और हाथ जोड़ कर प्रार्थना की कि वह उसे अरुणास्पद नगर का रास्ता बता दे।

वह सुन्दरी अप्सरा उस ब्राह्मण के रूप सौन्दर्य को देख कर मोहित हो उठी। उसने स्निग्ध मुस्कान से कहा, "हे ब्राह्मण अरुणास्पद नगर में क्या रखा है ? जिसके लिए तुम इतने व्याकुल हो रहे हो ? मेरे साथ विवाह करलो तो तुम्हारी पृथ्वी भ्रमण की इच्छा भी पूरी हो जाएगी और तुम जिस हिमालय को देख कर मोहित हो रहे हो वह हिमालय सदा के लिए तुम्हारा निवास स्थान बन जाएगा।"

युवक बोल, "हे सुन्दरी तुम देव, गन्धर्व लोक की अप्सरा हो मैं क्षुद्र मानव लोक का वासी हूँ। भ्रमण की इच्छा से अपने नित्यकर्म त्याग कर यहाँ आया था,

अपनी अज्ञानता से इस दुर्गम पथ पर फंस गया हूँ, हमारा तुम्हारा विवाह किसी प्रकार संभव नहीं है, तुम कृपा कर मुझे अरुणास्पद नगर पहुंचा दो। मैं नित्यकर्म किए बिना जल भी ग्रहण नहीं कर सकता। तुमसे विवाह करके मेरा धर्म-कर्म सब नष्ट हो जाएगा अतः मेरी प्रार्थना सुनो और मुझे मेरे घर पहुंचा दो।"

उस अप्सरा ने युवक को अनेक प्रलोभन दिए, परन्तु उस चरित्रवान युवक का मन न डिगा उसने आर्त स्वर से अपने गुरु का स्मरण किया और कहा कि यदि मन वचन कर्म से मैंने सदा सत्य का अनुशीलन किया हो तो ईश्वर मेरा मुझे इस नर्क से उद्धार करे। पीड़ा से उसका मन भर उठा, वह रोने लगा, इतने ही में उसकी आखें खुल गई, देखा अतिथि उसे जगा रहे हैं। वह हड़बड़ा कर उठ बैठा। स्वप्न की बात सोचता हुआ ही वह अतिथि सत्कार में जुट गया।" धन्वन्तरि के जाने का समय आया तो प्यार से बोले, जो मांगना हो माँग ले मुझे कुछ भी अदेय नहीं है।

युवक बोला, "महाराज! मुझे कुछ नहीं चाहिए। सद्बुद्धि बनी रहे यही आशीवाद दीजिए। ऋषि, 'तथास्तु' कह कर चलते बने। जो वस्तु अप्राप्य हो उसे पाने की इच्छा मत करो वर्ना दुःख होगा।

गरीबी मिटाओ

'गरीबी मिटाओ'
जैसे गरीबी ब्लैक बोर्ड पर
खींची गई रेखा है
कि हम डस्टर उठाएंगे
और उसे मिटा देंगे।
गरीबी फल है
अकर्मण्यता, भ्रष्टाचार और अपव्यय का
जिस की जड़ों में हम
स्वार्थों की रोज खाद देते हैं,
सींचते हैं उसे
अपने पड़ोसियों के आंसुओं से
मिले केवल घनी छाया
जिस में पनपते रहें हम
घास के जंगल की तरह।

आओ, पहली कुल्हाड़ी हम उठाएं
यह पेड़ जिस में गरीबी का फल लगता है,
बारबार तोड़ते हैं बारबार उगता है,
चाहे वह हमारी जर्जर सामंतवादी,

संस्कृति का हो,
चाहे पूंजीवादी मनोवृत्ति का,
चाहे हर आदमी के अंदर छिपी
चंगेज, नादिर की लुटेरी प्रवृत्ति का,
इस की घनी छाया के नीचे
गेहूं के पौधे में कीड़े लग जाते हैं
गुलाब के पौधे मुरझा जाते हैं
और इस में उगता है गरीबी का फल
जिसे हम चाहेअनचाहे खाते हैं,

जड़ को पोसना
फल को कोसना केवल छल है।
इस पेड़ को काट कर
जला कर बहा देना,
कि कहीं एक भी अंकुर शेष न रह जाए
जो रक्तबीज की तरह उगे
भावी पीढ़ी को उसे,
इस से निष्कृति पाने का एक मात्र हल है।

—शरतचन्द्र अग्रवाल

e element reduces to 25 % of its initial mass in 1000 years. Find its half life.

योग तथा प्राकृतिक जीवन

—रामेश्वरदास गुप्त महामन्त्री अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन, दिल्ली

पातजली योगदर्शन के अनुसार योग के आठ अंग हैं—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। जन-जीवन में स्वस्थ रहने के लिए, निरोग रहने के लिए, रोगों का मुकाबला करने के लिए हमें यम, नियम, आसन और प्राणायाम इन चार अंगों पर गहन रुप से विचार करना है।

यम—सर्वप्रथम हम यम के विषय में विचार करेंगे। योग का प्रथम चरण, प्रथम सीढ़ी है 'यम'। यम पांच होते हैं—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह।

अहिंसा:—यम का प्रथम सूत्र है अहिंसा। खहिंसा का साधारण अर्थ है किसी को दुख न देना। इस शब्द को लेकर हम जितनी भी गहराई में उतरते जाएंगे, उतना ही इसका भाव गहरा होता चला जाएगा। साधारणतः किसी को शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कष्ट नहीं देना, यातना नहीं देना और किसी भी प्रकार की अपने शरीर पर हिंसा नहीं करना, अपने शरीर को कष्ट नहीं देना, यह सब अहिंसा की परिधि में आते है। अपने मन को, अपने शरीर को, अपनी आत्मा को, अपने से इतर शरीर को, केवल मनुष्य के शरीर को ही नहीं अपितु समस्त प्राणिमात्र को कष्ट नहीं देना, उस पर हिंसा नहीं करना, उसके साथ प्यार, सहानुभूति और समता का व्यवहार करना ही अहिंसा व्रत का पालन करना है। यदि हम किसी कार्य को बार-बार करके अपने शरीर को थका देते हैं तो वह भी हिंसा है। किसी पशु को आप डंडा मार कर चलाना चाहते हैं, वह भी हिंसा है। आप आसन करते समय अपने शरीर के साथ जोर-जबरदस्ती करके अपनी नसों पर; नाड़ियों पर दवाब डालते हैं, जिससे नसें और नाड़ियां फट जाती हैं, यह भी हिंसा है। हमें अहिंसा का पालन करते हुए प्रत्येक स्थान पर हिंसा से बचना चाहिए।

सत्य:—यम का दूसरा सूत्र है 'सत्य'। सत्य का साधारण अर्थ है-यथार्थ, वास्तविक। जीवन में सत्य का व्यवहार हर मनुष्य के लिए अनिवार्य है, क्योंकि सत्य को छोड़कर अन्य कोई आचरण करने में अर्थात् झूठ बोलने में मनुष्य निर्बल हो जाता है, डरकोप बन जाता है। साथ ही यह झूठ मनुष्य की आत्मा का हनन कर देता है, जिससे उसमें स्वाभिमान टिक नहीं पाता। कई लोग कहते हैं कि व्यापार में कुछ न कुछ तो झूठ बोलना ही पड़ता है। यह बात भ्रम फैलाने वाली तो अवश्य हैं, परन्तु इसमें तथ्य कुछ भी नहीं है। इसलिए हमें किसी भी स्थिति में सत्य का त्याग नहीं करना चाहिये। झूठ नहीं बोलना चाहिए और सत्य को ही धारण करना चाहिए।

अस्तेय:—यम का तीसरा सूत्र है 'अस्तेय'। अस्तेय का सीधा-सादा अर्थ है-चोरी न करना। जो चीज़ हमारी नहीं है, जिस चीज पर हमारा अधिकार नहीं

है, उस पर परोक्ष रुप से छल-कपट द्वारा, चोरी से स्वाधिकार कर लेना ही चोरी कहलाता है ।

ब्रह्मचर्य :—यम का चौथा सूत्र है ब्रह्मचर्य । गृहस्थ आश्रम का पालन करते हुए तथा साधारण जन-जीवन के क्षेत्र में रहते हुए ब्रह्मचर्य की परिभाषा यही है कि स्त्री तथा पुरुष को नियन्त्रित भोग करते हुए ब्रह्मचर्य का पालन करना । विषय भोग स्त्री तथा पुरुष की एक बहुत ही महत्वपूर्ण एवं सुन्दर आकांक्षा है । इसके अभाव में दोनों वर्गों का जीवन नीरस सा और उदासीन बनकर रह जाता है । परन्तु नियन्त्रित विषय भोग जहाँ आनन्द, शक्ति, चेतना प्रदान करता है, वहां अनियन्त्रित होने पर यह कष्टकर और जान लेवा भी बन जाता है । साधारण जन-जीवन में नियन्त्रित विषयों का भोग करते हुए भी उनपें लिप्त न होना ब्रह्मचर्य का पालन करना कहलाता है ।

अपरिग्रह :—यम का पांचवा सूत्र है अपरिग्रह । अपरिग्रह का शाब्दिक अर्थ है 'संग्रह न करना' । परन्तु आज के जन-जीवन में नहीं अपितु पूर्व-काल से ही मनुष्य किसी भी आश्रम में रहते हुए संग्रह करता रहा है, करता रहेगा । परन्तु यह संग्रह भी नियन्त्रित होना चाहिए । जितनी उसकी आवश्यकता है, उतना ही । उससे अधिक संग्रह नहीं होना चाहिए । धन-सम्पत्ति का संग्रह तो हम घर में, व्यापार में, दुकान में और बैंकों आदि में ही करते हैं । परन्तु शरीर के अंदर भी हम अनावश्यक, आवश्यकता से अधिक संग्रह कर लेते हैं । शरीर के अंदर किया हुआ संग्रह हमें बीमार बना देता है, रोगी कर देता है । आज न केवल जन-साधारण अपितु हमारे स्वास्थ्य के ठेकेदार, जिन्हें हम डाक्टर कहते हैं, वे भी अपने शरीर के अंदर आवश्यकता से अधिक संग्रह कर लेते हैं । जिसके कारण वे डाक्टर भी रोगी हो जाते हैं । आज अधिकांश रोगी (डाक्टर) रोगियों का इलाज कर रहे हैं । इसलिए सबसे पहले अपने शरीर में यदि कुछ संग्रह कर लिया है तो उसे बाहर निकालने का पर्याप्त प्रयास आरम्भ कीजिए और कुछ दिन में ही इसका हिसाब किताब चुकता करके हल्के-फुल्के बन जाइए । संग्रहित गन्दगी को बाहर निकालिए और भविष्य में भी संग्रह मत कीजिए ।

नियम—योग का दूसरा चरण, दूसरा अंग, दूसरी सीढ़ी है 'नियम' नियम भी पांच हैं। वे इस प्रकार हैं—शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर-भक्ति ।

शोच :—नियम का प्रथम सूत्र है 'शौच' । शौच का सीधा-सादा अर्थ है स्वच्छता एवं पवित्रता । स्वच्छता का सबसे पहला साधन है—जल । जल में स्नान करके हम अपने शरीर के मैल को दूर कर सकते हैं और स्वच्छ कर सकते हैं । जल पीकर हम अपने शरीर के अन्दरूनी भागों को स्वच्छ रख सकते हैं । जल के द्वारा हम अपने आस-पास की गन्दगी भी साफ कर सकते हैं । सदाचार द्वारा हम अपनी आत्मा और मन को स्वच्छ रखकर दुर्भावनाओं का त्याग करके सद्भावनाओं को ग्रहण कर, उनका प्रसार कर, हम स्वच्छ रह सकते हैं ।

सन्तोष :—नियम का दूसरा सूत्र है संतोष । 'सन्तोष' का सीधा-सादा अर्थ है जो कुछ भी मिल गया, उसी में सन्तुष्ट रहना, आनन्दित रहना । क्योंकि जब हम अपने अंदर असंतोष पैदा करते हैं तो हममें हिंसा, द्वेष, चोरी आदि अनेक दुर्भावनाएं उत्पन्न होती हैं और हम असंतोष के द्वारा अनेक ऐसे कार्य कर बैठते हैं जो संतोष की प्राप्ति में और अधिक बाधक बन जाते हैं । इसलिए हमें हर अवस्था में संतोष को धारण करते हुए, संतुष्ट रहते हुए आनंदित रहना चाहिए ।

तप :—नियम का तीसरा सूत्र है 'तप' । तप को हम साधारण अर्थ में सामर्थ्य, सहनशीलता और कठिनता पर विजय प्राप्त करना कह सकते हैं । जन-जीवन में तप का अर्थ गुफाओं में जाकर समाधि लगाना नहीं है अपितु अपने अंदर शारीरिक और मानसिक रुप से सहनशक्ति को उत्पन्न करना है । अपनी इन्द्रियों को साध कर रखना, मन को नियंत्रण में रखना, भूख-प्यास से, सर्दी-गर्मी से विचलित नहीं होना अपितु उसे सहन करना और उसी में सन्तुष्ट रहना, जिस वातावरण में हम रहते हैं, उसी वातावरण के अनुकूल आचरण करना तप कहलाता है ।

स्वाध्याय :—नियम का चौथा सूत्र है 'स्वाध्याय' । स्वाध्याय का सीधा सादा अर्थ है अध्ययन । अध्ययन द्वारा ज्ञान की प्राप्ति, ज्ञान का अर्जन होता है । हर दिन, हर घड़ी ज्ञान की सृष्टि होती रहती है । ज्ञान आगे बढ़ता रहता है । स्वाध्याय के द्वारा हम बढ़ते हुए ज्ञान को प्राप्त करते रहते है । यदि स्वाध्याय न होता तो हम आज भी बैलगाड़ी के युग से राकेट में पहुच कर भी बैलगाड़ी के पीछे लटकते रहते । राकेट का ज्ञान ही नहीं होता । इसलिए हमें समय और सामर्थ के अनुसार स्वाध्याय करना ही चाहिए । स्वाध्याय भी समय और आयु के अनुसार ही होना चाहिए । ऐसा न हो कि चार-पांच वर्ष के बच्चे, जिसे माता-पिता, भाई-बहन, घर-बार के विषय में स्वाध्याय करने-कराने की आवश्यकता है, के हाथ में वेद अथवा उपनिषद थमा दें । इससे उसका कुछ भला होने वाला नहीं है । स्वाध्याय समय और आयु के अनुसार निरन्तर करते रहना चाहिए ।

ईश्वर-भक्ति :—नियम का पांचवा सूत्र है 'ईश्वर भक्ति' । ईश्वर-भक्ति के लिए सबसे पहले हमें अपने माता-पिता, भाई-बहनों में आस्था होनी चाहिए, श्रद्धा होनी चाहिए । क्योंकि हमारा सबसे पहला भगवान माता है, पिता है, भाई है, बहन है, मनुष्य है । मनुष्य की हम सेवा करें, मनुष्य के रुप में भगवान के हम दर्शन करें । अपने माता-पिता के प्रति, अपने गुरुजनों के प्रति, अपने अधिकारों के प्रति हम वफादार रहें और इन्हें ही अपना साकार भगवान स्वीकार करें । तभी हम निराकार भगवान के दर्शन कर सकते हैं, उसमें आसक्त हो सकते हैं । भगवान के दर्शन करने के लिए ही हमें सर्वप्रथम मनुष्य की सेवा करनी चाहिए । यही वास्तव में 'ईश्वर भक्ति' है ।

दया और क्रोध

—राजेशकुमार महेश्वरी

एक गांव में एक पण्डित था । आस-पास के किसी भी गाँव में शास्त्र सम्बन्धी कोइ सन्देह पैदा होता तो उस पण्डित से अपनी शंका का निवारण कर लेते ।

पर वह महा पण्डित परम दरिद्र था । एक जून उपवास करता । उसकी यह हालत जानकर गाँव के एक प्रमुख व्यक्ति ने पण्डित की दरिद्रता को दूर करना चाहा । उसने राजा के पास जाकर कहा—"महाराज, आपके शासन में ऐसे महा पण्डित को उपवास करते रहना आपके लिए कलंक की बात होगी ।"

राजा ने उस प्रमूख व्यक्ति की बातों पर विश्वास करके अपने सिपाहियों के द्वारा सोने की मुद्राओं की एक गठरी पण्डित के पास भेज दी । सिपाहिओं ने जाकर कहा— "पण्डित जी, आपकी विद्वत्ता के बारे में राजा ने सुन कर यह उपहार भेजा है, लीजिए ।"

"राजा की कृपा का पात्र बनने के लिए मैंने कुछ नहीं किया है । इसलिए यह उपहार राजा को वापस दे दीजिए ।" पण्डित ने सिपाहिओं से कहा ।

इसके बाद पण्डित की पत्नी ने उसकी निन्दा की और पूछा—'तुमने ऐसा क्यों किया ?'

राजा ने किसी की बातें सुनकर मेरे पास उपहार भेज दिया है, फिर किसी ने मेरी निन्दा कर दी तो, तब राजा मेरा सिर भी कटवा सकते हैं न ? इसलिए राजा दया और क्रोध में समान रूप से समर्थ होते हैं । पण्डित ने जवाब दिया ।

भारत में प्रथम

—ब्रजगोपालराय 'चंचल'

भारत का प्रथम वाइस राय

—लार्ड केनिंग

भारत का अन्तिम वाइसराय तथा स्वतंत्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल

—लार्ड माउण्टबेटन

स्वतंत्र भारत के प्रथम व अन्तिम भारतीय गवर्नर जनरल—

—चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

भारतीय गणतंत्र के प्रथम राष्ट्रपति

—डा. राजेन्द्र प्रसाद

भारत के सर्वप्रथम प्रधान-मन्त्री

—जवाहर लाल नेहरू

प्रथम भारतीय महिला प्रधान मन्त्री

—श्रीमती इन्दिरा गाँधी

किसी भी प्रान्त की प्रथममहिला राज्यपाल

—सरोजिनी नायडू

भारत की, संयुक्त राष्ट्र संघ की अध्यक्षा

—विजय लक्ष्मी पंडित

प्रथम भारतीय, नौबुल पुरस्कार विजेता

—रवीन्द्र नाथ ठाकुर

इंग्लिश चैनल पार करने वाली प्रथम भारतीय महिला

—श्रीमती आरती गुप्ता

भारतीय विश्व सुन्दरी चुनी जाने वाली प्रथम महिला

—कुमारी रीता फारिया

नन्ने-मुन्ने

सम्पादक

सुनिल भैय्या एम० ए० (उत्तरार्द्ध)

पढ़ो और हँसो

—ब्रजेन्द्र कुमार

सेठजी (डाक्टर से फोन पर) 'मेरा लड़का पेन खा गया है । जल्दी आइये ।'

डाक्टर : मेरे पास बहुत मरीज हैं । जरा देर से आऊंगा ।'

सेठजी : 'तब तक क्या करूं ?"

डाक्टर : 'पेन्सिल से लिखो ।'

\+ \+

जज (कैदी से) : 'तुमने लालाजी की तिजोरी का ताला क्यों तोड़ा ?'

कैदी : क्या करता हुजूर ? 'मेरे पास चाबी नहीं थी ।'

\+ \+

दूकानदार (बालक से) : 'क्यों मुन्ना कौन-सा कलैण्डर चाहिए ?'

मुन्ना : 'जिसमें छुट्टियां ज्यादा हों ।'

\+ \+

सेठानी (ज्योतिषी से) : क्या मेरे नसीब में पुत्र नहीं है ?'

ज्योतिष : 'नहीं तुम्हारे नसीब में पुत्र नहीं है, पर तुम्हारे बेटे के एक पुत्र जरूर होगा ।'

पहेलियां

—रमाशंकर

(१)

भूड़ में भुड़कइया डोले,
पूछ मेरे हाथ में ।

(२)

झर्र झर्र झर्री हल्दी जैसी प्यारी,
कटक चूम ले गई बहुत दुख दे गई ।

(३)

साधू क्यों न भीगा,
ढोलक क्यों न बजी ।

(४)

एक पेड़ झबरा, उसके नीचे पटरा,
उसके नीचे जुगनू, उसके नीचे सूं सूं ।
उसके नीचे हप्प-हप्प बताओ उसका नाम ।।

(५)

सेर भर की लोमडी सवा सेर की पूंछ ।
जहां जाये लोमड़ी, वहां जाये पूंछ ।।

उत्तर—१. रोटी, चिमटा, २. बर्र, ३. मही न थी, ४. सिर, ५. सुई धागा ।

अमूल्य वचन

—संजीवकुमार, बीसलपुर

आलस्य भी एक प्रकार की हिंसा है । —महात्मा गाँधी

इतिहास में ऐसी घटनाओं के लेख है जो कभी नहीं घटी और उनका लेखक ऐसा व्यक्ति है जो घटनाओं के समय कभी उपस्थित नहीं था । —अनाम

हम इस प्रकार जीवन व्यतीत करें कि हमारे मरने पर दफनाने वाला भी दो आँसू बहा दे । —पेट्रार्क

अपना दोष ढूंढ़ निकालना ज्ञान वीरों का काम है । — विवेकानन्द

व्यक्ति जिसको प्रेम करता है । उसके द्वारा सरलता से धोका खा जाता है । — मोलियार

जहाँ स्त्री का सम्मान होता है वहाँ देवता भी प्रसन्न रहते हैं । —मनु

फर्क

—अन्सारी कनीज फातमा, अहमदाबाद

बेगम साहिबा हुक्म सुनाए चली जा रही थी। कलुआ यह सब बर्तन साफ करके, ड्राइंग रूप की भी सफाई कर दे और उसके बाद मैं जो सामान कहूँ वह बाजार से ले आ।" कलुआ ने सहते हुए अन्दाज में कहा, "बेगम साहिबा, उसके बाद आप मुझे छुट्टी दे देंगी ना। कल मुझे भी परिक्षा देने जाना है।" "तेरी परिक्षा जाय चूल्हे की भाड़ में, वह गरजी, और जो तेरे साहब ने अपने दोस्तों को पार्टी दे रखी है तो क्या मैं सारा दिन किचिन में बैठी अपना सर खपाऊँगी। दो टके का लड़का और हाकिम का शौक चुराया है। ऐसा ही शौक था तो क्यों इस गुलामी में लगे हों? किसी रईस के घर पैदा होना था। देख कलुवा! अगर तेरा यही हाल रहा तो मैं तेरी हमेशा के लिए छुट्टी कर दूँगी। "छुट्टी" का नाम सुनते ही कलुआ काँप गया। उसकी आँखें भर आईं और वह चुपचाप सिर झुका कर बर्तन साफ करने लगा।" नहीं, नहीं, अभी तो उसे कालेज में ऐडमीशन लेना है। अगर उसकी "छुट्टी" हो गई तो यह सहारा भी खत्म हो जाएगा।"

उसका सिर्फ नाम ही कलुआ था। वह तो एक दुबला पतला सोलह वर्ष का खूबसूरत लड़का था। वह एक ऐसे मनहूस बाप का बेटा था, जिसने शराब के नशे में मदहोश होकर अपने साथ-साथ अपनी भोली सी पत्नी और मासूम लड़के की जिन्दगी को जहन्नम बना दिया था। जब कलुवा पाँच साल का था तभी नशे की हालत में उसके बापू की मौत हो गई। अब उसकी माँ के पास इसके सिवा कोई चारा न था कि वह कहीं नौकरी करले और उसने बेगम साहिबा के यहाँ नौकरी कर ली। वह दिन रात वहीं काम करती और रात को बरामदे में ही सो जाती क्योंकि अब उसका अपना कोई घर न था। सिर्फ कलुआ ही उसके जीवन का एक सहारा था लेकिन अभी तो वह बहुत छोटा था। कलुआ की माँ एक बहुत ही समझदार औरत थी। वह कलुआ को उसके बापू की तरह शराबी और जुआरी बनने नहीं देना चाहती थी, और न ही वह चाहती थी कि उसका इकलौता बेटा जाहिल रह कर जीवन भर किसी जालिम सेठ की घुड़कियाँ सुनता रहें। इसीलिए उसने कलुवा का नाम अभी से स्कूल में लिखवा दिया था। और नन्हा मुन्ना कलुवा अब अपने फटे

पुराने कपड़े मैला कुचैला बस्ता लेकर खुशी खुशी स्कूल जाता। लेकिन बेचारी बद-नसीब माँ उसे बड़े इन्सान के रूप में देखने की तमन्ना ही में रह गई और एक दिन टी० बी० के रोग में चल बसी। मरते वक्त उसने कलुआ को बेगम साहब को सोपते हुए कहा था कि "बीबीजी इसे अपने चरणों से जुदा मत करना।"

यह कलुआ की खुशकिश्मती और शायद साहब की कुछ रहमदिली थी जो वह दरवदर की ठोकरें खाने से बच गया। यों तो बेगम साहेबा ही सख्त दिल और चिड़चिड़ी औरत थी, परन्तु कलुवा में सहनशक्ति भी हद से ज्यादा थी। वह इस छोटी सी उम्र में ही बेगम साहेबा का काफी हाथ बटाने लगा था, इसीलिए उन्हें बोझ नहीं लगा। चालाक तो इतना था कि कभी किसी सौदे में एक पैसे की भी भूल होना असम्भव था। और उसकी यही जहनीयत देख साहब ने उसकी पढ़ाई जारी रखी। पर जब वह फाईनल का इम्तेहान पास कर चुका तो साहब भी फिसल पड़े क्यों कि उनका मकसद पूरा हो चुका था। वह चाहते थे कि अपने ही फर्म में कलुवा को चपरासी बना देंगे इस लिए सात दर्जा बहुत हो चुका। पर कलुवा की किस्मत अभी बुलन्द थी। एक मास्टर साहब जो उसे बहुत मानते थे, उनके जोर देने पर वह हाईस्कूल में दाखिल हो गया। वह फर्स्ट क्लास पास हुआ था, इसलिए उसकी फीस बगैरह भी माफ हो गई। मास्टर साहब की तरफ से उसकी किताबों और कापियों का भी इन्तजाम हो गया और एक बार फिर कलुआ की नई जिन्दगी का आरम्भ हुआ। अब उसके होसले काफी बढ़ चुके थे। उसने काफी मिन्नत व सयाजत करके साहब से स्कूल के समय तक की छुटी माँग ली थी। स्कूल से आते ही वह फिर घर के कामों में लग जाता और जब रात के दस बजे उसे काम से फुर्सत मिलती तो वह किताबें लेकर बैठ जाता और आधी-आधी रात तक किताबों में खोया रहता। यह इसी मेहनत का फल था जो वह एम० एस-सी० का इम्तेहान देने जा रहा था। वह इस गुलामी की जिन्दगी से नफरत करता था किन्तु इसके सिवा कोई और रास्ता भी तो न था। दूसरे यह कि वह अपने साहब के ऐहसान को कैसे भूल सकता था अगर वह उसे बचपन ही में घर से निकाल देते तो क्या पता आज कहाँ होता? यही सब सोच-सोच कर वह चुपचाप सब गमों को सहे जा रहा था। इतनी उम्र में वक्त ने उसे बहुत कुछ सिखा दिया था।

साहब का एक लड़का था राजू जो बहुत ही लाड़ प्यार में पलने की वजह से काफी बिगड़ चुका था। बेगम साहेबा तो उसके सामने स्नेह की मूर्ति ही बन जाती। तीन साल तक मैट्रिक में फेल होने के बाद वह कलुवा का क्लासफेलो हो गया था। अपने दोस्तों के सामने वह कलुवा की बेइज्जत करते हुए भी बाज न आता था। पर कलुवा यही सब सहने के लिए ही तो पैदा हुआ था। साहब भी उससे बस इतनी हमदर्दी रखते थे कि उसके आराम में खलल न हो।

साहब के दोस्त चार बजे आने वाले थे। वह बेगम साहेबा के साथ नाश्ते की

तैयारी में लगा हुआ था। सुबह से उसे साँस लेने की फ़ुरसत भी न मिली थी और रात तक उसे कोई उम्मीद नजर नहीं आती थी। इस वक्त उसके दिमाग में सिर्फ इम्तेहान घुसा हुआ था। यूँ तो उसकी तैयारी अच्छी थी लेकिन फिर भी मैट्रिक का इम्तेहान था कोई हँसी खेल नहीं और उसे तो ऐसे नम्बरों से पास होना था जिससे उसे कॉलेज में आसानी से एडमिशन मिल सके। पर अब वह कुछ और बोल कर बेइज्जती मोल लेना नहीं चाहता था।

रात के दस बजे होंगे वह सब चीजें ठिकाने से रख रहा था बेगम साहेबा फिर हुक्म सादर करने लगीं, "कलुवा राजू के पाँच दोस्त आए हुए हैं। रात भर उन्हें पढ़ना है। यह काम खत्म करके उन लोगों के लिए बढ़िया सी चाय बना कर दे आना और आज तेरे साहब बहुत थक गए हैं उसके हाथ पैरों की मालिश भी कर देना।" वह चली गईं कलुआ वहीं सिर पकड़ कर बैठ गया। अभी तो वह सोच रहा था कि बस यह काम करके वह पढ़ने बैठ जाएगा और अब यह दूसरी बला नाजिल हो गई। पर अब सर पकड़ कर बैठने से क्या हासिल? यह चाय लेकर राजू के कमरे में पहुँचा तो देखा कि "दोस्त साहिबान अपनी-अपनी किताबें आराम से भेज पर सजा कर ताश खेलने में मस्त थे। वह चुपचाप चाय बना कर लोगों को पेश करने लगा। जब वह साहब के कमरे में पहुंचा तो वह ऊँघ रहे थे। वह धीरे से उनके पास पहुंच कर पैर दबाने लगा।

वह सोच रहा था अपने बचपन की बात, जब उसके बापू शराब पीकर आते थे, और बेहोशी में कहीं भी पड़ जाते थे तो उसकी माँ आहिस्ता-आहिस्ता उनके पैर दबाने लगती। वह मेरे बापू की पत्नि थी, तो क्या बेगम सहेबा साहब की पत्नि नहीं है? तो ···फिर, यह फर्क कैसा? क्या वह पैर दबाने से छोटी हो जाएँगी? क्या यह काम नौकर ही कर सकता है?" इतने में उसने सुना बेगम साहेबा राजू से कह रही थीं, "बेटा देर तक न जागना, वरन् तबियत खराब हो जायगी।' उनके जाते ही राजू के दोस्त कहकहे लगाने लगे। और एक बार फिर कलुवा का दिल चीख उठा, "क्या राजू ही इस प्यार का हकदार है? क्या मैं इन्सान नहीं? क्या मेरे कोई माँ बाप नहीं, इसीलिए मैं इतना लाचार हूँ? क्या यही फर्क है मेरे और राजू के बीच? मैं पढ़ने के लिए एक-एक मिनिट को तरस रहा हूँ और वह मौका पाकर भी खुशगप्पियों में मगरूक है? मैं एक कप चाय के लिए तरस कर रह जाता हूँ और दिमाग मजबूत करने के लिए उसे रोज मेवा मसाला दिया जाता है? क्या मैं एक कोमल बालक नहीं हूँ। हे भगवान! तो फिर यह कैसा फर्क है? मेरे और उसके हाथ ढीले पड़ने लगे। लेकिन जल्द ही उसके दिमाग ने जवाब दिया, "हे पागल तुझे इतनी भी बात नहीं मालूम। वह एक लखपती बाप का इकलौता बेटा है और तू एक अनाथ, गरीब और बेबस बालक।

दुराग्रह पूर्ण दृष्टि बनाम अलौकिक दृष्टि

—कु० सुनीती अग्रवाल "शोभा" उझानी (बदायूँ)

'आलोचना' शब्द 'लोचन' शब्द से निर्मित है; जिसका अर्थ भाई रामेश्वरदास गुप्त के शब्दों में 'दुराग्रह पूर्ण दृष्टि पूर्वाग्रह पूर्ण दृष्टि' है।

'आलोचना किसी भी व्यक्ति की और व्यक्ति के किसी भी कृत्य की की जा सकती है। 'आलोचना' शब्द अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है। किसी व्यक्ति के दृष्टिकोण, चरित्र आदि के विषय में सही ज्ञान करना हो तो उसे आलोचना की कसौटी पर कसा जा सकता है। 'आलोचना' द्वारा व्यक्ति रूपी कंचन के खरे-खोटे होने की पहचान हो जाती है।

'आलोचना' किसी बुरे व्यक्ति की ही नहीं, अच्छे व्यक्ति की भी की जाती है और एक साहित्यकार की भी की जाती है। परन्तु आलोचक को अपने ऊपर गर्व नहीं करना चाहिए। उसे तटस्थ रहकर आलोचना करनी चाहिए।

अब प्रश्न यह उठता है कि आलोचना दुराग्रह पूर्ण दृष्टि है या पद-प्रतिष्ठा से भ्रमित बन्धु के लिए "अलौकिक -ज्योति"? इसका उत्तर कुछ जटिल होने के साथ-साथ कमल जाल-सा सरल व सीधा भी है।

यदि आलोचक समाज-सुधार को तथा देश एवं समाज की आवश्यकताओं व दृष्टिकोणों का ध्यान रखते हुए आलोचना करता है तो निः सन्देह आलोचना आलोच्य का पथ—प्रदर्शन कर सकती है किन्तु यदि आलोचक केवल स्वयं को ध्यान में रख कर आलोच्य को नीचा दिखाने की दृष्टि से आलोचना करता है तो वह आलोचना एक दुराग्रह पूर्ण दृष्टि ही कही जायेगी।

कोई व्यक्ति तो दूसरों की निन्दा अपने को दर्शाने तथा दूसरे को निम्न कोटि का सिद्ध करने को करता है तो दूसरा परहित को दृष्टि में रखकर।

आज आलोचना करना एक फैशन होता जा रहा है। पद-पद पर हमें आलोचक मिल जायेगें। फिर इन आलोचकों से डर क्यों? इन आलोचकों के प्रति आलोच्य को श्रद्धा रखनी चाहिए और उसका दृष्टिकोण सन्त कबीर के निम्न दृष्टिकोण के समान होना चाहिए—

"निन्दक नियरे राखिए,
आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना,
निर्मल होत सुभाय॥"

आलोच्य को आलोचक की बात का बुरा न मानकर शान्ति से सोचना चाहिए कि 'आलोचक ने मेरी आलोचना क्यों की? कहीं न कहीं मुझमें कमी अवश्य होगी।' गलतियाँ तो इन्सान से होती ही हैं। यदि आलोच्य आलोचना पर मनन करके अपनी त्रुटि स्वीकार कर लेता है तो उसे हीन नहीं अपितु महान समझा जायेगा।

जो आलोचक केवल आलोचना करने के लिए, अपने को बड़ा सिद्ध करने के

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में अग्र प्रत्याशी

जनता प्रत्याशी रामप्रकाश, बनारसीदास मा० आदित्येन्द्र आदि कांग्रेशी प्रत्याशी बनारसीदास गुप्त आदि श्रीमती जैन निर्दलियों में भी अनेक बन्धु चुनाव मैदान में।

जून माह में होने वाले १३ राज्यों में विधान सभा निर्वाचनों में अग्रवाल उम्मीदवारों के नाम अपनी जानकारी के अनुसार दे रहे हैं।

हरियाणा

हरियाणा राज्य में भिवानी से राज्य के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री बनारसीदास गुप्त कांग्रेस के पुनः उम्मीदवार हैं वे भंग विधानसभा के सदस्य और राज्य के मुख्यमत्री थे। उनके विरुद्ध ९ और उम्मीदवार हैं।

कैथल से श्री रघुनाथ गोयल, हांसी से श्री बलदेव सिंह तायल हिसार से श्री बलवंतराय अग्रवाल जनता पार्टी के उम्मीदवार हैं।

भंग विधानसभा की उपाध्यक्षा श्रीमती लेखवती जैन अंबाला से कांग्रेस की उम्मीदवार हैं। वथीन से श्री प्रभू-दयाल मीतल तथा थानेसर से श्री ओम प्रकाश गर्ग कांग्रेस के उम्मीदवार हैं।

श्रीमती ओम प्रभा जैन भी जो कांग्रेस से त्यागपत्र देकर लोकतांत्रिक कांग्रेस में शामिल हुई थी अब निर्दलीय के रूप में कैथल से चुनाव लड़ रही हैं।

उत्तर प्रदेश

उत्तरप्रदेश में जनता पार्टी के प्रत्याक्षियों के रूप में सर्वश्री सत्यप्रकाश अग्रवाल-बरेली सिटी, जितेन्द्र कुमार अग्रवाल सुलतानपुर, शिवलाल मीतल सोहरतगढ़, रतनलाल गर्ग–मेरठ छावनी, सुमेरचंद्र गोयल-सहारनपुर, कृष्ण स्वरूप वैश्य-बदायूं, रामप्रकाश गुप्त-लखनऊ मध्य, प्रदीप कुमार बजाज-रूद्रपुर बनारसीदास–खुर्जा और श्याम सुन्दर गुप्त-उरई से चुनाव लड रहे है।

कांग्रेस के भी सर्वश्री केदारनाथ अग्रवाल-बहराईच तथा राज कुमार अग्रवाल-शहाजहांपुर और कम्युनिष्ट पार्टी के श्री आर के. गर्ग चुनाव लड रहे है।

निर्दलियों में सर्व श्री औंकारशरण अग्रवाल-हल्द्वानी, जसवन्तकुमार अग्रवाल मेरठ छावनी, सत्यप्रकाश विकल, बांके, बिहारी अग्रवाल, दाऊदयाल छाते वाले राधारमन गर्ग—आगरा पूर्वी, ताराचन्द अग्रवाल—आगरा पश्चिमी, तथा विजय कुमार अग्रवाल—फिरोजाबाद के अलावा अनेक अन्य अग्र-प्रत्याशी है। जिनमें से अनेक प्रत्याशी बैठ भी गये हैं।

श्री वेद प्रकाश मंगल के निधन के कारण निर्वाचन स्थगित हो गया।

मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश में भंग विधानसभा सदस्य श्री राधाकृष्ण गर्ग मुलताई से, श्री ताराचंद अग्रवाल अम्बिकापुर से, श्री जुगलकिशोर बजाज हटा से, श्री रामकुमार अग्रवाल-रायगढ़ और श्री सत्यनारायण अग्रवाल-बरसिया से कांग्रेस के टिकिट पर चुनाव लड़ रहे हैं।

जनता पार्टी के प्रत्याशी के रूप में सर्वश्री शंकर कानूनगो देवास से, मंगनलाल गोयल-टोकमगढ, लक्खीराम अग्रवाल-सारिया, डा. द्वारका प्रसाद अग्रवाल-कोटा, डा० रमेश अग्रवाल-खल्लरी, धर्मपाल गुप्त- धमध्व, राजेन्द्र अग्रवाल-केवलारी, नरहिंसदास गोयल -विदिशा और हरीश केडिया-अफलतरा से चुनाव लड़ रहे हैं। इनके अलावा अनेक निर्दलीय अग्रबन्धु चुनाव मैदान में हैं। जिनमें से अनेक बैठ भी गये हैं।

राजस्थान

राजस्थान में जनता पार्टी के टिकिट पर सर्वश्री हरिशंकर गोयल-रामगढ़, चिरंजीलाल गर्ग-पुष्कर, विरदमल सिंघवी-जोधपुर और रामनारायण विश्नोई–लूनी मा० आदित्येन्द्र – नगर तथा मुकुटबिहारी गोयल–व्याना से चुनाव लड़ रहे हैं।

इनके अतिरिक्त अजमेर से श्री राज कुमार गोयल तथा श्री सत्यनरायण अग्रवाल भी निर्दलीय रूप से प्रत्याशी हैं।

पंजाब

पंजाब विधानसभा के लिये जनता पार्टी के बाबू श्रीचंद गोयल बनूर से उम्मीदवार हैं।

उड़ीसा

उडीसा में जनता पार्टी ने श्री गोपीनाथ अग्रवाल को काटाभांजी से अपना उम्मीदवार घोषित किया है।

बिहार

बिहार विधानसभा के लिये भी जनता पार्टी के उम्मीदवार के रूप में सर्वश्री मदनलाल सिंघानिया-बेतिया से, शंकर प्रसाद टेकड़ीवाल-सहरबा से और विश्वनाथ मोदी–कोकरमा से खड़े हैं।

प्रो० श्रीमती विनीता अग्रवाल ने कांग्रेस का टिकिट अस्वीकार कर दिया।

दिल्ली महानगर परिषद

दिल्ली परिषद के लिए भी अनेकों अग्रबन्धु प्रत्याशी है। हमारी जानकारी अनुसार जनता पार्टी से सर्वश्री सामलदास गुप्ता, राजकुमार जैन, शिवचरन गुप्ता, गोपालकृष्ण कमला नगर से जनता पार्टी से चिरतीराम गोयल, कांग्रेस से पुरुषोतम गोयल, निर्दलीय श्री एस० पाल गोयल तथा चाँदनी चौक से श्री सुखवीर शरण अग्रवाल निर्दलीय रूप से प्रत्याशी हैं।

दिल्ली महानगर पालिका

दिल्ली महानगर पालिका में जनता पार्टी से श्री महेन्द्रसिंह बंसल–नरेला, काँग्रेस से श्री बी० के० गर्ग—दरियागंज तथा श्री लक्ष्मीनारायण अग्रवाल—शक्ति नगर के अलावा अनेकों अग्रबन्धु संस्थागत तथा निर्दलीय रूप से चुनाव लड़ रहे हैं।

इनके अलावा भी अनेकों बन्धु चुनाव यज्ञ में भाग ले रहे हैं। जिनकी जानकारी प्राप्त नहीं हुई है।

अग्रबन्धु के अगले अङ्क में हम विस्तृत जानकारी तथा विजेता बन्धुओं के सचित्र परिचय देने का प्रयास कर रहे हैं। आशा सम्बन्धित बन्धु नव निर्वाचित अग्र-विधायकों के फोटो तथा परिचय भिजवाने की कृपा करेगा।

आओ ! पकवान बनायें

चने काबुल के और व्यंजन दक्षिण भारत के

काबुली यानी बड़े-बड़े सफेद चने, जिसका उपयोग बहुत कम ही लोग करते है—अधिकांश तौर पर पंजाब में छोले और दक्षिण भारत में सुंदल के रूप में लेकिन ज्यादातर सिर्फ चने की दाल या सब्जी के रूप में ही चने का उपयोग किया जाता है दक्षिण भारत में नवरात्रि पर प्रसाद में इसी काबुल चने का संदल बनता है काबुल चने न मिलें तो देसी चने भी काम में ला सकते हैं।

नमकीन सुन्दल

सामग्री : १ कप काबुली चने, ४ हरीमिर्च, चुटकी भर हींग, १छोटा चम्मच राइ, चुटकी भर सोडा (खाने का) नमक, १/२ कप कसा हुआ नारियल तथा नींबू।

विधी : चनों को अच्छी तरह धो लें, फिर सोडा डाल कर रात भर भिगोयें नमक डाल कर कुकर या भगोने में उबाल लें अब कढ़ाई में तेल गरम कर, हींग, हरी मिर्च (बारीक कटा हुआ) तथा राई डालकर छौंक लगायें और उबले चनों को डाल दें फिर नारियल डाल कर दो मिनट तक पकायें अब उतार कर उसमें नींबू का रस डाल दें और फिर परोसें।

मीठा सुन्दल

इसमें सभी सामग्री पहले जैसी, बस गुड़ और इलायची जोड़ दें पहले वाले व्यंजन की तरह इसे भी बनाये चने और गुड़ को डाल कर पकायें और पानी सूख जाने पर इलायची डाल कर उतार लें।

दाल का सुन्दल

इसमें भी वही सामग्री, बस मिर्च और कड़ीपत्ता अलग से, छौंक में ही उसे डालें और पहले की तरह ही बनायें अब आप देखें कि इसे बनाने के बाद आपके मेहमानों को नये व्यंजनों का स्वाद कैसा लगता है।

मीठे पुलाव

मीठा चावल अथवा पुलाव कई किस्म से बनाया जाता है। सूखे मेवे का, खोवे या केवल मलाई से भी बनाया जाता है। कुछ न हो तो केवल शक्कर से भी बनता है। एक दिन अचानक कुछ मेहमान आ टपके, अब उनकी आवभगत के लिए क्या करूं। तभी मुझे खयाल आया कि कुछ मिठाइयां पड़ी हुई हैं, जिससे पुलाव बनाने की बात एकाएक दिमाग में आयी। सच, मेरी तो उस दिन इज्जत रह गयी और मेहमान उस मीठे पुलाव की तो तारीफ ही करते रहे। आप भी बना कर देखें।

सामग्री—२ कटोरी बासमती चावल या कोई अच्छे किस्म का चावल, केसर, इलायची, गुलाब जल और बची हुई मिठाइयां।

विधि—जितनी भी मिठाई हो, उसका चूरा करके रख दीजिए। चावल को एक घण्टे पहले भिगो दीजिए। पहले एक पतीली में पानी चढ़ा कर जरा-सा चुटकी भर जरद-चमेली मिठाई का रंग पानी में डाल दीजिए, फिर उसमें चावल की दो कनी पकने के लिए रह जाए, तब उसे उतार कर पानी निकाल कर फेंक दीजिए और पतीले को ढंक दीजिए। पाँच मिनट बाद एक थाल में चावल और मिठाई का चूरा मिलाइए। अब एक पतीली में दो कलछी या इससे कुछ अधिक घी डाल कर एक बड़ी इलायची, दो-चार तेजपात और एक टुकड़ा दालचीनी डाल कर मिठाई सहित चावल डाल कर ढंक दीजिये। हाँ, आग काफी मंदी रखिए। थोड़ी-थोड़ी देर में हिलाती जाइए। जब सारा पानी सूख जाय, तो उतार कर ढंक कर रख दीजिए। अगर मिठाई कम हो तो शक्कर भी मिला सकते हैं। दस पंद्रह मिनट बाद ढक्कन खोलिए, मीठे चावल तैयार हैं। केसर घोंट कर और इलायची पीस कर कटोरियों में अलग-अलग डाल कर परोसिये।

—शांति मोतीचन्द्र

घर-घर की ज्योति

सम्पादिका—

श्रीमती अलका गोयल, एम. ए.

इन्हें भी आजमाइये

१. हाथों में लगी में लगी मेंहदी हाथों में अच्छा तरह रचेगी।

२. घर में जूते चप्पलों को पेट्रोल से साफ करने के बाद पालिस करने से अधिक चमकीला पन आता है।

३. चिकने बरतनों को थोड़ा आटा लगाकर साफ करने से चिकनाहट भी छूटेगी और चमकने भी लगेंगे।

४. चाय बनाने के बाद चाय की बची पत्तियाँ गुलाब के पौधों में अच्छे खाद के रूप में डालिये।

५. पके हुए दूध में थोड़ा-सा टारिक ऐसिड मिलाने से पाँच मिनट में दही जम जाता है।

६. कत्थे के धब्बे के स्थान पर दही लगाना चाहिए।

बहनों से निवेदन

"घर-घर की ज्योति" स्तम्भ आपका स्तम्भ है। इस स्तम्भ में घर-ग्रहस्थी की समस्या और उसके समाधान आदि पर रचनाऐं तथा दैनिक उपयोग मे आने वाली व्यंजन विधी, घरेलू उपचार आदि विस्तृत जानकारी प्रकाशित की जाती है।

बहनों से निवेदन है कि आप इस स्तम्भ को और अधिक उपयोगी एवं रोचन बनाने हेतु अपने अनुभव द्वारा रचनाऐं भेजने का कष्ट करें।

"नन्ने-मुन्ने" स्तम्भ के लिये आप अपने नन्ने-मुन्नों के (फोटो) चित्र प्रकाशनार्थ भेजें।

आपकी बहन

—अलका दीदी

रायपुर में १४-१५ मई को

आंचलिक एवं प्रादेशिक सम्मेलन सम्पन्न

उत्पादन वृद्धि के बिना मूल्य नियन्त्रण असम्भव—श्री रामप्रसाद पौदार

छत्तीसगढ़ आंचलिक एवं म. प्र. अग्रवाल सम्मेलन के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध उद्योगपति मेजर श्री राम प्रसाद जी पौद्दार ने १५ मई ७७ को रायपुर में विशाल सम्मेलन को सम्बोधित करते हुऐ कहा कि "वस्तु की उपलब्धता और मूल्य से उपभोक्ताओं का सीधा सम्बन्ध होता है। इसलिए जब भी मूल्य बढ़ते हैं, असन्तोष मुखरित हो उठता है।" "बीते तीन वर्षों में कपड़े के दाम पौने दो गुना बड़े हैं। आखिर ऐसा क्यों हुआ ? इसका एक मात्र कारण उत्पादन में कमी है। महाराष्ट्र में १७ लाख गाँठ का उत्पादन होता था, किन्तु अब यह उत्पादन केवल ७ लाख गाँठ रह गया है।इसी कारण से १५ लाख गाँठ कपास एक वर्ष में बाहर से मंगानी पड़ी। देश में कपास का पर्याप्त उत्पादन होता तो कपास व कपड़े के दाम न बढ़ते अतः मेरा सुझाव है कि खेत-खलिहान और कारखानों में उत्पादन बढ़ाया जाय।"

जमाखोरी एवं अधिक मुनाफे की रीति का परित्याग करें

श्री पोद्दार ने व्यापारी समुदाय से अपना दृष्टिकोण बदलने का आग्रह किया और कहा कि, "वे जमाखोरी एवं अधिक मुनाफे की नीति का परित्याग करें। व्यापारी समाज उचित मुनाफा लेकर एकदम टर्नओवर करें तो उनकी आय सही तरीके से ही काफी बढ़ जायगी।" श्री पोद्दार ने अपील की कि हम सब चरित्रवान बनें और अनुशासित रहें, तभी राष्ट्र और समाज प्रगति कर सकता है।

श्री पोद्दार ने कहा कि अग्रवाल संगठन ५० वर्ष पुराने हैं फिर भी जैसा होना चाहिये वैसा संगठन नहीं हो पा रहा है। संगठन के पुनःप्रयास अभिनंदनीय हैं और मेरी उनके प्रति शुभकामनाएं हैं। उन्होंने कहा कि कोई भी समाज कुरुति विहीन नहीं है इसलिये इससे लज्जित होने की कोई बात नही है परन्तु उन्हें हमें धरोहर नहीं बनाना चाहिये। उन्हें बनाये रखकर समाज को आगे बढ़ाना संभव नहीं है।

दहेज वह है जो ठहराया जाता है

दहेज के संबंध में उन्होंने कहा कि अपनी बेटी जवांई को अपनी इच्छानुसार देना दहेज नहीं है। दहेज वह है जो ठहाराया जाता है। इसके हल के लिये समय लगेगा और समय आयेगा जब यह मिट जायेगा। उन्होंने कहा कि दहेज नहीं मिटा तो प्रेम विवाह और अर्न्तजातिय विवाह बढ़ने लगेंगे।

श्री पोद्दार ने कहा कि हर सगाई, विवाह पुत्र जन्म आदि को खुशियां अवश्य मनाई जावे परन्तु उसमें समाज के अन्य वर्गों में ईर्शा पैदा होने का मौका नदें। इसलिये हमें चाहिये कि हम दिखावा न करें। इस सबध में मारवाड़ी सम्मेलन बम्बई ने १० सूत्री साहिता बनाई है उसे अपनाऐं।

सम्मेलन द्वारा प्रकाशित स्मारिका का विमोचन

श्री पौद्दार जी ने इस अवसर पर रायपुर के समाज सेवी श्री हर प्रसाद जी अग्रवाल, सम्पादक "शिवनाथ" के प्रधान सम्पादन में सम्मेलन द्वारा प्रकाशित स्मारिका का विमोचन भी किया।

दिखावा बन्द : सामूहिक एवं विधवा विवाह को प्रोत्साहन

पहले दिन अनेक प्रस्तावों पर खुली चर्चा हुई और वे पारित किये गये। उनमें प्रमुख हैं लड़का देखने, और गोद भरने ७ से अधिक व्यक्ति न जायें। वर शोभा यात्रा में अतिशबाजी, फुलवाडी, नाँच, तमासे आदि न किये जावें। विवाहों में बैंड बाजे को टाला जावे और यदि टालना न बने तो ११ से अधिक व्यक्तियों का बाजा न हो। निकासी तथा टुकाव सूर्यास्त के पूर्व ही किया जावे। बरातियों द्वारा पत्तल न ली जावे। फेरे दिन में ही करने का प्रयत्न किया जावे। भोजन में मिठाई अधिक से अधिक ३ ही परसी जावे। मृतक भोज बन्द किया जावे। बरात के मार्ग में जलपान आदि की प्रथा बन्द की जावे। विवाह में टीका और ठहराव बंद किया जावे। बरात में ५१ बरातियों से अधिक न रहे तथा बरात २४ घन्टे से अधिक न रुके। विवाह का खर्च भी निर्धारित राशि से अधिक न हो। कन्या को दिखाने का कार्य निजी घरों के स्थान पर न कर मंदिर, अग्रसेन भवन आदि स्थलों पर किया जावे, उस समय वर पक्ष के ५ से अधिक व्यक्ति न आवें और जलपान बन्द। एक परिवार को एक से अधिक बार और बिना लड़के के लड़की न दिखाई जाय और जो विधवाऐं बच्चेवाली हैं तथा पुनर्विवाह नहीं करना चाहती उनके निर्वाह के लिये लघु उद्योग स्थापित किये जाय। टीका (सगाई) समारोह बन्द कर केवल गोद भरने का रिवाज अधिक से अधिक ५ किलो मिठाई, २० किलो फल, १ किलो मेवा और १०१ रुपये से किया जाय। सोने के जेवर और गिन्नी आदि न दिये जायें। बरात-ठुकाव के समय नीचों का भोंडा कृत्य न किया जाय। महिलाओं की मिलनी भी ४ रुपये से अधिक न हो। सगाई के समय नास्ता तथा नरियल आदि बांटना बन्द हो। सामुहिक विवाहों के आयोजन किये जाय। विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया जाय।

सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं को प्रोत्साहित करना आवश्यक

अनेक महत्वपूर्ण प्रस्तावों में से एक में यह भी कहा गया है कि अग्रवाल समाज का हर व्यक्ति सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं के महत्व को समझते हुए उनके ग्राहक बनें, उन्हें नियमित रूप से पढें जिससे वे देश में चल रही सामाजिक गति-विधियों से अवगत रहेंगे और उससे समाज संगठन को बल मिलेगा। वे अपने समाचार और विचार भी उनमें प्रकाशित करने के लिए भेजें। उससे उन्हें समाज सुधार के कार्यों में सक्रिय भाग लेने का अवसर भी मिलेगा।

योग्य वर न तलास कर सकने वाला समाज सम्पन्न कहलाने के योग्य नहीं

जो समाज अपनी कन्याओं की योग्यता के अनुरूप वर का प्रबन्ध नहीं

करता और लडकियां कुंवारी रहने पर मजबूर होती हैं, वह चाहे जितना ही धनी और वैभव संपन्न क्यो न हो परन्तु सभ्य और सुसंस्कृत कभी नहीं कहला सकता"। ये उद्‌गार श्रीमती मंजुलता सिंघानिया ने १५ मई की, रायपुर में हुए छतीसगढ़ आंचलिक अग्रवाल महिला सम्मेलन के स्वागत मंत्री पद से बोलते हुए प्रकट किए।

सामाजिक एकता हेतु आपसी प्रेम आवश्यक—डा० स्वराज्यमणि

सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषणा में समाज की विदुषी नेत्री श्रीमती डा० स्वराज्य मणी अग्रवाल ने कहा कि समाजिक ऐकता हेतु वहनों में आपसी प्रेम आवश्यक है। वर की माँ वहन आदि को दहेज के लेनदेन की वात न करनी चाहियें तथा नही दहेज की कमी में अपनी वहु को पीडा देनी चाहिये। उन्हें अपनी पुत्रियों की भाँति शिक्षा पाने एवं घुमने फिरने आदि मनोरजन की आजादी देनी चाहिये।

महिला सम्मेलन में कु० आशा वागडिया, श्री मती सुशीला देवी, श्रीमती सरस्वती देवी राजनादगाँव, कु० सतोष गोयल, कु० शशि कला अग्रवाल राजनादगाँव, कु० किरण अग्रवाल, एव श्रीमती मालती रायगढ़, श्रीमती सुभद्रादेवी दुर्ग ने विचार प्रगट किये।

अग्रवाल छात्रावास की आवश्यकता और निर्माण—श्री सिंघानिया

आरम्भ में स्वागताध्यक्ष श्री किशनलाल सिंघानिया ने श्री पोद्दार का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। श्री सिंघानिया ने अग्रवाल छात्रावास की आवश्यकता और उसके निमणि की जानकारी दी। तत्पश्चात विभिन्न सामाजिक इकाईयों और सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने माल्यार्पण कर श्री पोद्दार का स्वागत किया। स्वागत मंत्री श्री महावीर प्रसाद अग्रवाल ने शादी-विवाह में प्रचलित कुरीतियों की समाप्ति हेतु क्रान्तिकारी कदम उठाने का आह्वान किया। सम्मेलन की अध्यक्षता अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं मध्य प्रदेश अग्रवाल महासभा के अध्यक्ष श्री बद्री प्रसाद अग्रवाल ने की। कार्य क्रम का संचालन छतीसगढ़ आंचलिक अग्रवाल सम्मेलन के मंत्री श्री महावीरप्रसाद अग्रवाल ने किया। अधिवेशन में श्रीमती स्वराज्यमणि अग्रवाल, श्री तिलकराज अग्रवाल, श्री रामेश्वरदास गुप्त, ने अपने विचार व्यक्त किए। मंच पर सम्मेलन के उप महामन्त्री श्री हरिकिशन अग्रवाल नागपुर, श्री माधुरी सरन अग्रवाल भोपाल, श्री रतनलाल गर्ग इन्दौर और भूतपूर्व संसदसदस्य श्री श्रीकृष्ण अग्रवाल भी उपस्थित थे।

युवक सम्मेसन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का सफल आयोजन

इस अवसर पर युवक सम्मेलन का भी आयोजन किया गया। रात्रि के समय श्री रामरिख मनहर के निर्देशन में बम्बई के कलाकारों एवं संगीतज्ञों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

अग्रबन्धु प्रचार-प्रसार हेतु भ्रमण

अग्रबन्धु व्यवस्थापक श्री अनत बंसल 'अनीत' अग्रबन्धु प्रचार हेतु राजस्थान मध्यप्रदेश एव महाराष्ट्र के भ्रमण मे निकले हुए हैं।

स्थानीय समाजसेवी वन्धुओं से निवेदन है कि सहयोग प्रदान कर अनुग्रहित करें। —सम्पादक

(शेष पृष्ठ २१ का)

लिए आलोचना करते हैं, उसमें प्राय: सारहीन कथन ही होता है फिर भी हो सकता है कि उसमें कोई न कोई सार हो। अत: आलोच्य को चाहिए कि वह पूर्ति उसकी उपेक्षा न करे। एक बार अवश्य उसकी आलोचना पर भी ध्यान दे। ऐसा करने पर आलोच्य का नैतिक स्तर ऊँचा उठ सकता है।

अत: स्पष्ट है कि आलोचना किसी भी उद्देश्य को रखकर की गई हों, वह आलोच्य के द्वारा ग्राह्य है। उस पर ध्यान देना तथा उसके अनुसार अपनी त्रुटियों का ह्रास करना उसका कर्तव्य है अत: मेरी दृष्टि में आलोचना दुराग्रह पूर्ण दृष्टि नहीं है, वरन् पद—प्रतिष्ठा से भ्रमित बन्धु के लिए "अलौकिक-ज्योति" है, जो उसके हृदय पटल को खोलकर आलोच्य का उपकार करती है।

अग्रवाल-गुप्ता-सिंघवी

समाचार के सचालक नियुक्त

समाचार की प्रबन्ध समिति ने 'समाचार' में सर्वश्री बालेश्वर अग्रवाल पी सी. गुप्ता और डा. एल एम. सिंघवी को संचालकों के रूप में नियुक्ति की है।

सम्पादक के नाम पत्र खुला

सम्पादक महोदय !

गत महीने आगरे में आ० भारतीय अग्रवास सम्मेलन के महामन्त्री श्री रामेश्वर दास जी गुप्त के आगमन पर उनके सम्मान में अग्रवन्धु मिलन गोष्ठी के तत्वाधन में आयोजित सम्मान गोष्ठी में जाने का मुझे सोभागय मिला जिसमें हमें अग्रवाल सम्मेलन द्वारा प्रकाशित विवाहयोग्य कन्याओं की एलवम देखने की मिली। प्रयास वहुत सुन्दर एवं समाज के लिये प्रगतिशील है लेकिन जितना इस एलवम पर खर्चा हुआ हैं। उतना इससे समाज को लाभ मिल सकेगा यह एक शंकायुक्त प्रसंग है।

इसके साथ ही पृष्ट संख्या ११ पर राजपूत कन्याओं के तीन सचित्र विवरण दिये है वह क्या इस अग्रवाल सम्मेलन की प्रकाशित एलवम के उपयुक्त हैं। इससे हमारा या राजपूत समाज का तथा उन वहनों का क्या भला हो सकेगा। यह प्रश्न भी अपने आपमें गौण है।'

मुझे आशा ही नही पूर्ण विश्वास है कि महामन्त्री महोदय मेरी इन शकाओं का समाधान शीघ्र ही करने की कृपा करेगी। भवदीय

विपिनकुमार अग्रवाल
अध्यक्ष अग्रवाल क्लव, आगरा।

- महाराजा अग्रसेन एवं अन्य महान पूर्वजों की जानकारी
- अग्रोहा : उत्थान और उसका पतन
- अग्रवाल समाज का इतिहास
- बच्चों एवं महिलाओं के ज्ञानार्जन
- वर की तलाश : एक समस्या और निदान

के लिए आज ही

अग्रबन्धु

के आजीवन एवं वार्षिक सदस्य बनकर

अग्रवाल समाज व राष्ट्र की उन्नति में सार्थक बनिये

वार्षिक शुल्क १२) आज ही मनिआर्डर द्वारा भेजिये

अग्रबन्धु मासिक कार्यालय

प्रयाग नरायन मार्ग, आगरा-२८२००३

अग्रोहा - अग्रसेन - अग्रवाल

पर आधारित श्री त्रिलोक गोयल द्वारा रचित दो महान ग्रन्थ

इतिहासिक एकांकी संग्रह

पात्र जी उठे

मूल्य ३) रु०

तथा

इतिहासिक कहानी संग्रह

खंडहर बता रहे हैं

मूल्य ३) रु०

डाक खर्च अलग— दस पुस्तक मँगाने पर डाक खर्च निःशुल्क

बन्धु प्रकाशन

कोकामल मार्केट, प्रयाग नरायन मार्ग, आगरा-२८२००३

प्रकाशक एवं मुद्रक—प्रकाश बंसल मुनिम मुद्रणालय के लिए विमल मुद्रण केन्द्र में छपा 'अग्रबन्धु' कार्यालय, कोकामल मार्केट प्रयागनरायन मार्ग, आगरा-२८२००३